धर्मरक्षा पंचांग (२०२२-२३)

श्री विक्रम संवत्- २०७९, शक संवत्- १९४४

नत्वा शारदां देवीं शुद्धां गणितं करोम्यहम्| सनातनधर्मरक्षाय धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्||

दिक्कालाद्यनवच्छिन्नानन्तचिन्मात्रमूर्तये| स्वानुभूत्येकसाराय नमः शिवाय तेजसे||

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत| अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्||
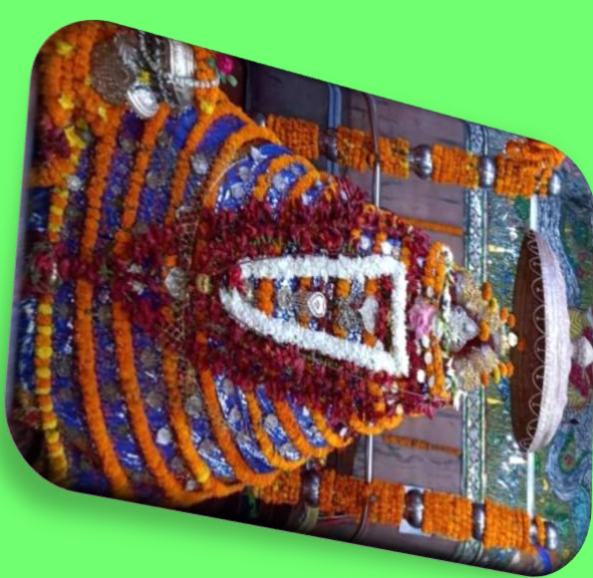
ज्योतिषाचार्य/हस्तरेखाविद्-

(१) पं. श्री संतोष तिवारी (ज्योतिष, वास्तु, कर्मकाण्ड)
+916299953415,

(२) पं. रंजन तिवारी +919523772973

(३) पं. संजन तिवारी (सञ्जनाचार्य्य जी)
+919852837558

विषय सूची

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

विनम्र निवेदन

हरि: ॐ; मैं शारदा देवी को नमन करके सनातन धर्म की रक्षा के लिए शुद्ध ग्रह-गणित वाले धर्मरक्षापंचाग का प्रारम्भ कर रहा हूँ| संवत् २०७८ का धर्मरक्षापंचाग आपके कर कमलो में समर्पित करते हुए अपार हर्ष हो रहा है| इस पंचाग में तिथि, नक्षत्र आदि मिनटात्मक और करण दण्डात्मक में दिया गया है| इसमें व्रत-त्योहारादि के साथ कुछ विशेष जानकारी भी है, फिर भी मानवीय त्रुटि संभवित रहती है अतः सुधीजन पाठकों से निवेदन है कि इस प्रयास को और बेहतर बनाने के लिए आपका अमुल्य सुझाव अपेक्षित है| अपना सुझाव दें- Ranjanmuraudpur01@gmail.com

धर्मरक्षा, हिन्दुत्व, सनातन संस्कृति के प्रचार-प्रसार के इस मिशन चलाने के लिए और इस पंचाङ्ग के विकास के लिए हमें अर्थ(फंडिंग) की जरूरत है। हिन्दू विरोधी ताकतों के पास फंडिंग देश-विदेशों (हर जगह) से आ रही है, ताकि हिन्दू और हिन्दुत्व(सनातन संस्कृति) को समाप्त किया जा सके, परंतु हम निरंतर प्रयास कर रहे हैं कि सभी सनातन प्रेमीयों को अपने संस्कृति की गुढ़ जानकारी हो और सब एकत्र हो तथा विश्वभर में सनातन धर्म/सनातन संस्कृति का प्रचार और प्रसार हो, ताकि हमारे विरुद्ध चल रहे सभी षड्यंत्रों को विफल किया जा सकें। कृपया हमारे इस प्रयास को सफल करने के लिए हमारा साथ दें।

IFSC Code- CBIN0281774

Account No- 5167433915

पञ्चाङ्गेऽस्मिन् अक्षांश:- २५|४६, रेखांश:- ८४|५४, पलभा:- ५|४७|३०

यदक्षरपदभ्रष्टं मात्रादिहीनन्तु भवेत्|

तत्सर्वं क्षम्यतां प्रभो प्रसीद परमेश्वर||

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते|

पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते||

ॐ सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः|

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत्||

||ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः||

अद्भुत् काम्य प्रयोग

1-रोग, व्याधि, दुर्घटना, भय, दु:स्वप्न, दुष्कृत्य आदि के नाश हेतु महामृत्युंजय जप, शतचण्डी पाठ, गजेन्द्रमोक्ष पाठ, रामरक्षा पाठ, सुन्दरकाण्ड आदि का पाठ कराना चाहिए| जप संख्या-१०००००, पाठ- १००| **2**- पुत्रप्राप्ति प्रयोग- संतान गोपाल प्रयोग पुत्रप्राप्ति हेतु उत्तम अनुष्ठान है इसके अलावा पुत्रेष्टि यज्ञ, रुद्रानुष्ठान, शिवस्तोत्रपाठ, शतचण्डी पाठ आदि भी श्रेष्ठकर है **3**-पुत्रप्राप्ति हेतु आम्रयक्षिणी मंत्र प्रयोग सपादलक्ष उत्तम है| **4**-पति/पत्नी प्राप्ति(विवाह) हेतु- कात्यायनी मंत्र से सम्पुट शतचण्डी पाठ करावे| **5**- परीक्षा में सफलता हेतु- ग्रहण काल में ब्राह्मण द्वारा नील शारदास्तोत्र का १०८ पाठ अथवा, वाग्देवीमंत्र प्रयोग १००८ उत्तम है| **6**-लक्ष्मी प्राप्ति(धनवृद्धि) हेतु- ब्राह्मण द्वारा श्रीसूक्त का १००८ पाठ रात्रि में कार्तिककृष्ण ३० को प्रतिवर्ष करें| **7**-बाल रक्षा प्रयोग- नजर आदि से रक्षा के लिए भस्म को ब्राह्मण से महामृत्युंजय मंत्र द्वारा अभिमंत्रित कराकर बालक के दाहिनी भुजा पर बाधे| **8**-नाकारत्मक उर्जा,शत्रु, प्रेतादि दोष, क्रूरग्रह निवारण हेतु बगलामुखी प्रयोग उत्तम है| **9- कालसर्प** दोष निवारण- श्रावण मास में नागपञ्चमी को भगवान रुद्र का अभिषेक करें और चाँदी के नाग नागिन का पूजन कर कोयले और काले पताके के साथ बहते जल में प्रवाहित करें | यह नागपंचमी के अलावा श्रावण माह के किसी भी बुधवार को कर सकते हैं|

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

श्रीशुभसंवत् २०७९ शक १९४४ सन् 2022-23 ई. का ग्रहण (भारत में दृश्य होने वाले का) विवरण

इस वर्ष चार ग्रहण लग रहा है लेकिन यहाँ भारत में दिखाई देने वाले ग्रहणों का ही विवरण दिया जाता है।

१. कार्तिक कृष्ण ३० मंगलवार दिनांक **25.10.2022 को खण्डसूर्यग्रहण** दिखेगा। ग्रहण का भारतीय मानक समयानुसार प्रारम्भ 14:28, मध्य 16:30 तथा मोक्ष 18:33 में होगा।

प्रारम्भ-02:28 दोपहर

मोक्ष-06:33 संध्या

२. कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा मंगलवार दिनांक **08.11.2022 को खग्रास चन्द्रग्रहण** दिखेगा। भा. मा. समयानुसार ग्रहण का प्रारम्भ 14:39, मध्य 16:29 तथा मोक्ष 18:19 में होगा।

प्रारम्भ- 02:39

मोक्ष- 06:19

नोट:- ग्रहण जहाँ दृश्य होगा, सूतक वही के लिए मान्य होगा। चन्द्रग्रहण से पूर्व 09 घंटे तथा सूर्यग्रहण में 12 घंटे पहले ग्रहण का सूतक होता है।धर्मशास्त्रानुसार बालक, वृद्ध और रोगी को छोड़कर अन्य लोगों के लिए भोजन निषिद्ध है।

प्रमाण- सूर्यग्रहे तु नाश्नीयात् पूर्वं यामचतुष्टयम्|

चन्द्रग्रहे तु यामास्त्रीन् बालवृद्धातुरैर्विना||

वर्षफल

राक्षस सम्वत्सर में कोदो, धान आदि सभी अन्न नष्ट होंगे तथा प्रजा को कष्ट होगा। नल सम्वत्सर में पृथ्वी पर अन्न-जल मध्य होंगे। राजाओं में क्षोभ तथा चोर-लुटेरों का उत्पात बढेगा। अन्न और औषधि नष्ट होने से अकाल जैसी स्थिति एवं अन्न के मूल्यों में वृद्धि होगी। इस वर्ष राजा का पद शनि को प्राप्त होने से अल्पवृष्टि का योग बन रहा है। राजाओं में युद्ध की स्थिति बनेगी तथा जनता को कष्ट साथ ही आतंकवादी, चोरी, डकैती इत्यादि में वृद्धि होगी तथा प्रजाजन भूख से पीड़ित होंगे। अधर्मियों में अशांति रहेगी और वे सभी नाना प्रकार के षड्यंत्र करेंगे। मंत्री का पद गुरु को प्राप्त होने से धन-धान्य में वृद्धि, प्रचुर मात्रा में वर्षा होने से जनता में प्रसन्नता होगी। साथ ही राजा लोग प्रजापालन में तत्पर रहेंगे। सस्येश का पद सूर्य को प्राप्त होने से धान के भाव में गिरावट, आतंकवाद व चोरी की अधिकता, राज मंत्रियों में युद्ध की संभावना, अधिक वर्षा से बाढ की स्थिति तथा कहीं-कहीं फसलों की क्षति तथा कहीं-कहीं अधिक उत्पादन और वृक्षों में वृद्धि होगी। दुर्गेश बुद्ध के कारण सभी को सुख-साधन सामान्य भाव से प्राप्त तथा पथिक मार्ग बहुत सुलभ, सुखद होंगे। धनाभाव का योग, राजनेता रोग से ग्रसित होंगे, व्यापारियों में धन की कमी, किसान एवं ब्राह्मण लोगों में मानसिक संताप के कारण पीड़ित रहेंगे। रसेश भौम से रस पदार्थ के उत्पादन इषत् अर्थात कम, राजा द्वारा प्रजा को कष्ट संभव । राजा लोग प्रजा से विषम व्यवहार करे। वृष्टि कहीं-कहीं कम होगी। शुक्र को धान्येश पद की प्राप्ति होने से सर्वत्र सुभिक्ष, स्वस्थ्यता तथा सभी प्रकार के उपद्रव होंगे और धान्य महँगे होंगे। निरसेश शनि-शीशा, लोहादि ठोस पदार्थों तथा काले वस्त्रादि वस्तुएँ महँगी होगा। फलेश बुध- पृथ्वी पर फलो, पुष्पों में बृद्धि तथा उचित वर्षा होने कारण घास व कमल का उत्पादन अधिक होंगे तथा देश में जनता सुखी रहेंगे। मेघेश बुध- मेघ का राजा बुध होने से उत्तम बारिश होगी। भूसी वाले धान्य तथा रस पदार्थों का उत्पादन अधिक होंगे। विप्र वर्ग यज्ञादि कर्म में संलग्न रहेंगे। पृथ्वी पर अनेक प्रकार के सौख्य प्राप्त होंगे। नवमेघो के मध्य तम नामक मेघ का फल- **तमो मेघे न वृष्टि स्यात्।** द्वादश मेघों के मध्य नन्दसारी नामक मेघ में अतिवृष्टि होगी और व्यापारी लोग प्रसन्न रहेंगे। रोहिणी का निवास पर्वत पर होने से अत्यल्पवृष्टि होगी। राजा और रक्षक के प्रति अधर्मी लोग षड्यंत्र करेंगे। असमाजिकतत्व धार्मिक स्थलों

के उत्पात मचाने की दुस्साहस करेंगे। धर्मरक्षको शौर्य से अधर्मियों के गुट में भय का माहौल बनेगा। अधर्मियों के प्रति कुछ लोगों में आक्रोश रहेगा और लोग उन सभी अधर्मियों को चुन चुन कर बहिष्कार करना प्रारंभ कर देंगे। सूक्ष्मजीवाणुओं का प्रकोप, भूकम्प, अग्नि उत्पात होगी। अधर्मी लोग स्वयं को सबसे बड़े धार्मिक दिखाने का प्रयास करेंगे।

राशिफल

मेष:- यह वर्ष मध्यम उन्नतिकारक होगा। दूर की यात्राएँ करनी पड़ेगी। नौकरी, व्यवसाय में परिवर्तन का योग है। घर से दूर रहना पर सकता है। मानसिक तनाव बना रहेगा। वाहन प्राप्ति योग, क्रय-विक्रय का योग अच्छा है। क्रोध, पित्त और संधि वात से परेशान होंगे। मानसिक तनाव में वृद्धि, समान जन से विरोध की संभावना, जीवन संगिनी से मनमोटाव, एकाएक धन की हानि, सोचे हुये कार्य आसानी से पूर्ण होंगे। कारोबार में गति आयेगी। अकस्मात् धन खर्च हो सकते हैं। कुटुम्बकीय तनाव समाप्त होंगे। आपके शत्रुओं में वृद्धि, विश्वासपात्र व्यक्ति द्वारा आरोप लग सकता है। बड़े व्यक्तियों से मेलजोल आपके लिए अच्छे है। यात्रा कष्टप्रद तथा व्यर्थ का खर्च होगा। विद्यार्थियों के लिये अध्ययन में रुचि कर होगा। पारिवारिक कष्ट, चिंता, उद्वेग जैसे समस्याएं उत्पन्न हो सकती है। विवाद, अपव्यय तथा स्थान का त्याग संभव है। नौकरी में संघर्ष अधिक करना पड़ेगा। 1,3,8,11 दिनांक और मास कष्टकर होंगे।

वृष- वृष राशि वालों के लिये यह वर्ष अच्छा है। भाई तथा मित्रों से विवाद, श्वास संबंधित सावधानी रखें। आय में कमी, परिवारजनों में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे। नौकरी से सावधान, भाई बहनों का सहयोग, नविन संपत्ति का योग, माता-पिता का सहयोग, किसी निकट संबंधी से विच्छोह संभव है। मान-सम्मान की प्राप्ति, विद्या के क्षेत्र में रुचि बढ़ेगा। संतान पक्ष से भावनात्मक लगाव, कोट-कचहरी के मामलों में धीमी गति, वैवाहिक जीवन सुखमय व्यतीत होगा। मानसिक तनाव, गुरु के कारण समस्त कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। नौकरी से स्थिति में सुधार होगा। पदोन्नति की संभावना है। व्यवसाय में वृद्धि का योग राजनीतिक मतभेद होंगे। मन अशांत रहेगा, दूसरे के बोझ से आप दबे रहेंगे। राज अधिकारियों द्वारा सुख की प्राप्ति, सरकारी कार्य पूर्ण होंगे। घर का वातावरण सुखद होगा, शुभ कार्यों में रूचि बढेगी, शत्रुओं को विवेक के द्वारा पराजित करेंगे, व्यवसायियों के लिए इस वर्ष मुनाफा अच्छा होगा। 2,5,10 दिनांक एवं मास कष्टदायक होंगे।

मिथुन- मिथुन राशि वालों के लिए शनि की ढैय्या रहेगी। संघर्षोपरान्त सहायता मिलेगी, धन वृद्धि, पुत्रादि की प्राप्ति तथा भाग्य वृद्धिकारक होंगे। शत्रु पर विजय, परन्तु मान-सम्मान में कमी;अपमानित, प्रताड़ना तथा दण्ड के भागी होंगे। अनावश्यक विवाद से बचें। इस वर्ष के मध्य में लम्बी दूरी की यात्रा संभव है। कार्य क्षेत्र में मानसिक परेशानी बढेगी। प्रिय व्यक्ति से वियोग संभव है। स्थान बदलाव की संभावना है। स्वस्थ्य संबंधित परेशानियां, धूर्त इत्यादि जनों से परेशानी आ सकती है। राहु गोचरवश एकादश स्थान में आने से दान-पुण्यादि में रुचि होगी, किन्तु धन व भाग्य की हानि संभव है। स्वास्थ्य संबंधी छोटी-छोटी परेशानियां; भूमि, मकान, वाहन क्रय-विक्रय के लिए लाभकारक स्थिति बनी रहेगी। विद्यार्थियों को विद्या क्षेत्र में अधिक परिश्रम आवश्यक है। वैवाहिक जीवन में पति-पत्नी के मध्य में मतभेद बने रहेंगे। नौकरी में स्थान परिवर्तन हो सकता है। 4, 8, 12 दिनांक और मास कष्टकर होंगे।

कर्क- यह वर्ष उत्तम होंगा। धन की वृद्धि, पुत्र रत्न की प्राप्ति, इष्ट मित्रों का सहयोग, सभी कार्यों में सफलता की प्राप्ति, सुख-साधनों पर अधिक खर्च, घरेलू समस्याओं का समाधान, माता-पिता से प्रिति, भ्रातृ सुख की प्राप्ति, धार्मिक कृत्यों में रुचि, प्रतिष्ठित लोगों से मुलाकात तथा वार्तालाप संभव है। पदोन्नति का अवसर आ सकतें है। बार-बार यात्रा कष्टदायक होंगे। मानसिक तनाव के साथ-साथ दुर्घटना की संभावना है। निकट संबंधी का निधन हो सकता है। विद्यार्थियों को विद्या के क्षेत्र में रुचि बढेगी। संतानों में मतभेद हो सकता है। पुराने बात-विवादों का समाधान होगा। विवादित समस्या का हल, वैवाहिक जीवन में अपने दायित्वों का प्रतिपादन करे, उदास न रहे। साकारात्मक विचार आपके जीवन में खुशियाँ ला सकते हैं। मान-सम्मान में आकास्मात् वृद्धि, भूमि, वाहन आदि में

वृद्धि, शत्रु का बोलबाला,नौकरी धारियों का समस्याएं कम होंगी। इनके लिए 2, 3, 9 दिनांक और मास कष्टकर होंगे।

सिंह- सिंह राशि वालों के लिए यह वर्ष उन्नतिकारक होगा। घर परिवार में खुशी का माहौल होगा। रुके हुये धन की प्राप्ति हो सकती है। रोग तथा राजकीय हानि, नौकरी तथा व्यवसाय में हानि संभव है। शारीरिक कष्ट, लम्बी यात्राएँ होगी जो कष्टप्रद होंगे। पुत्रों से विरोध, धन-सम्पत्ति में वृद्धि; रोग एवं शत्रुओं पर विजय प्राप्ति; प्रदेश में लाभ, आर्थिक उन्नति के लिये प्रयास करते रहे। भूमि, भवन की प्राप्ति का संयोग है। संगीत, गायन, चित्रकला, मनोरंजन आदि साधनों में रुचि बढेगी,किन्तु वर्ष के अंतिम समय में मानहानि, ब्यर्थ का खर्च होने की उम्मीद है। आकस्मिक आशातीत धन प्राप्ति का लाभ होगा। भाई-बहनों में प्रेम बना रहेगा। नविन संपत्ति क्रय-विक्रय का योग मित्रों का सहयोग, अध्ययन क्षेत्र में अच्छी संभवना, प्रेम संबंध में अस्मंजस की उपस्थिति, संतानों उन्नति करेंगे, विरोधी शान्त होंगे, दाम्पत्य सुख की प्राप्ति, धर्मस्थल की यात्रा का योग, व्यवसाय के साथ नौकरी में पदोन्नति होने की संभावना है। मानसिक कष्ट के साथ-साथ भाग्योन्नतिकारक होंगे। इनके लिए 3, 7, 11 दिनांक और मास कष्टदायक होंगे।

कन्या- आपके लिए यह वर्ष शान्तिकारक होगा। अच्छे कार्य में सफलता की प्राप्ति; जीवन साथी के स्वास्थ्य संबंधी चिंताएँ बनी रहेगी। चोरों द्वारा धन सम्पत्ति की हानि तथा कर्मचारियों से भय होने की सम्भावना है; पुत्र व संबंधियों से अनबन होगी; चोट आदि की सम्भावना; घरेलू विवाद में शान्ति बनाये रखें; विद्या क्षेत्र में मानसिक संतुलन बनाये रखें। अल्प सुख की प्राप्ति; अधिकांश समय दुष्ट स्त्रियों के संघ व्यतीत करेंगे; बुद्धि भ्रमित तथा योजनायें नहीं बन पायेगी और आप निस्सफलता प्राप्त होगा। धन, संपत्ति व सुख में विशेष कमी अनुभव करेंगे। सन्तानों से सतर्क रहे। पति-पत्नी में मतभेद होंगे। सरकारी कार्यालयों में सफलता मिलेगी; भाई-बहनों का सहयोग प्राप्त होगा। विदेश यात्रा के संयोग है। आकास्मात् रोगों से ग्रसित होंगे। बच्चों को कष्ट; बुद्धि भ्रमित तथा मन अशांत रहेगा। दुष्टों का संघ हानिकारक होगा। अतः उनसे दूर रहे। माता-पिता का स्वास्थ्य बाधा युक्त रहेगा; व्यवसायियों के लिए यह वर्ष अच्छा है; नौकरी पेशा वाले के लिए भी यह वर्ष उत्तम है। इनके लिए 2, 4, 9 दिनांक और मास कष्टकर है।

तुला- तुला राशि वालों के लिए शनि की ढैय्या रहेगी। संघर्षमय जीवन व्यतीत होगा। परिश्रम अधिक किन्तु फल कम मिलेंगे। शारीरिक कष्टों से परेशान होंगे। धन की कमी का अनुभव; सन्तान की ओर से सुखद समाचार, कर्मचारियों से विवाद, स्थान परिवर्तन का प्रबल योग; कष्टकर यात्रा तथा सुखों में कमी; सामान्य जन व राजकीय व्यक्ति से वाद-विवाद तथा अपमानित हो सकते हैं। भूमि, भवन व वाहन संबंधी उपलब्धियां तथा आय संभव है। दाम्पत्य जीवन में विवाद संभव है। सार्वजनिक यश की प्राप्ति; लम्बी यात्राएँ; विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष अच्छा है। प्रेम-प्रागढ होंगे; व्यवसाय में वृद्धि; मानसिक क्लेश; उदर जनित कष्ट तथा नेत्र जनित कष्ट उत्पन्न होंगे। अपने संबंधियों तथा शत्रुओं से कष्ट उत्पन्न हो सकते हैं। किसी पर्यटन स्थल जाने का योग है। शत्रुओं से सावधान रहें। व्यपारियों के लिए यह वर्ष लाभदायक होगा। आजीविका के लिए शुभ समय; नौकरी वालों के लिए लाभ; अतः विवेकपूर्ण कार्य करें। 1, 7, 10 दिनांक तथा मास कष्टदायक होंगे।

वृश्चिक- वृश्चिक राशि वालों के लिए यह वर्ष सुख-शान्ति तथा आनन्दमय वृद्धि कारक होगा। आर्थिक मामलों में सुविधा बढेगी। सभी कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। पदोन्नति तथा व्यवसाय में उन्नति होगी। माता का स्वस्थ्य बाधा युक्त; दूर की यात्रा होगी; ऑफिसियल मामलों में सावधानी रखें; ,सन्तान की ओर से चिन्तित रहेंगे; पारिवारिक शुभ कार्यों की उन्नति; भूमि-भवन क्रय के योग; रोग, शत्रुओं पर विजय की प्राप्ति; शत्रु आपसे भय खायेंगे; धीरे-धीरे सभी कार्य आसानी से पूर्ण होंगे। मनचाहा सफलता प्राप्त होगी; नई स्थान या नौकरी प्राप्त होगी; मान-सम्मान में वृद्धि होगी; स्वास्थ्य उत्तम; मामा को कष्ट; भाई-बहनों में तालमेल में कमी; माता-पिता का सलाह उन्नति होग। मान-प्रतिष्ठा से सावधान; प्रेम संबंधी मतभेद; सन्तान को अच्छी सफलता मिलेगी; घरेलू समस्याओं में परेशानी; व्यवसाय में सामान्य लाभ; दुर्व्यसन के कारण धन-सम्पत्ति की हानि। 2, 9, 12 दिनांक और मास कष्टदायक होंगे।

धनु- धनु राशि वालों के लिए इस वर्ष में शनि की साढेसाती का प्रभाव रहेगा। रोजगार के क्षेत्र में परिवर्तन; मन में अशांति; धन से पति की हानि; स्थानांतरण की संभावना; भूमि विवाद; जमीन विक्रय संभव है; पारिवारिक मतभेद; मानसिक तनाव; अकारण वाद-विवाद तथा स्वजनों से शत्रुता होगी; पुराना विवाद संभम है; शत्रु षड्यंत्र रचते रहेंगे। परंतु विवेक का सहारा आपके लिए अच्छा रहेगा; संतान का प्रयास सफल होगा; राजपक्ष से सहयोग मिलेगा; मदद के लिए किये गये प्रयास सफल; कर्ज लेना पर सकता है; फसा हुआ पैसा वापस मिल जाने का समय है; अच्छे कार्यों में खर्च बढेंगे; ऑफिसियल मामलों में सावधानी बरते। शरीर कमजोर तथा सुख-साधनों में कमी; घर से दूर रहना पर सकता है; कार्यों में रुकावट आतें रहेंगे; किसी से अपमानित हो सकते हैं; विद्यार्थियों के लिए उत्तम समय है; अधिक क्रोध हानिकारक है स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें; नौकरी के प्रति अच्छा लाभ होगा; व्यापारियों के लिए श्रम अधिक करना पड़ेता; ऐश्वर्य में अचानक वृद्धि। 3, 7, 9 दिनांक और मास कष्टदायक होंगे।

मकर- मकर राशि वालों के लिए शनि की साढेसाती चल रही है। जिसका प्रभाव हृदय पर होगा। मानसिक तनाव, वाद-विवाद, घरेलू समस्या, निर्थक दौर-धूप, शारीरिक कष्ट, व्यवसाय में विवाद उत्पन्न होंगे। नौकरी या कारोबार से अलगाव की संभावना या हर कार्य में बाधाएं उत्पन्न होगी। राज कर्मचारियों को भी कष्ट होंगे। ऑफिसियल कार्यों में प्रगति नहीं दिखेगी। मित्रों से अनबन तथा धन, मान-प्रतिष्ठा में हानि की संभावना है। परिवारजनों का सहयोग संबंध में सुधार लायेगा। शस्त्र या पत्थर चोट का भय रहेगा; राजकीय बंधन का भय तथा संबंधियों से सहायता की कोई उम्मीद नहीं; संतान के प्रति चिंतित रहेंगे; नूतन कार्यों में सफलता प्राप्त होगी; नये वाहन की प्राप्ति; विद्या के क्षेत्र में कड़ी मेहनत करना पड़ेगा; धार्मिक कार्यों में खर्च की अधिकता बढेगी; व्यापारिक कार्यों में उतार-चढाव बना रहेगा; नौकरी वालों के लिए परेशानियां बढेगी; 2, 9, 11 दिनांक व मास कष्टदायक होंगे।

कुम्भ- कुम्भ राशि वालों के लिए शनि की साढेसाती चल रही है, जिसका प्रभाव सिर पर होगा। संघर्ष की स्थिति बनी रहेगी। स्वास्थ्य संबंधी, रक्त संबंधित परेशानी; विशेष रूप से मानसिक तनाव से बचें। परोपकार व दान आदि में रुचि बढेगी। चल संपत्ति आदि में वृद्धि के योग है, किन्तु अपने कुटुंब से दूर जाना पर सकता है। दूर की यात्राओं के साथ-साथ कष्ट उठाना पड़ सकता है; किसी निकट संबंधी का निधन या संबंध विच्छेद हो सकता है। घरेलू समस्याएं उत्पन्न होगी। आर्थिक मामले में योजनाबद्ध रुप से कार्य करने से लाभ; पूँजी-निवेश पर ध्यान रखकर कार्य करें; वाहन आदि से चोट-चपेट की सम्भावना है। आप अस्वस्थ रहेंगे; सभी कार्यों में अवरोध उत्पन्न होते रहेंगे। कार्य क्षेत्र में उतराव-चढाव होता रहेगा। व्यापार तथा जीविका के अतिरिक्त परिश्रम से सुधार होगा। परिवारिक मामलों में मतभेद उभर सकते हैं। अत: अपने सोच को साकारात्मक रखें। विद्या के क्षेत्र में परिश्रम से लाभ; आकास्मात् लाभ प्राप्त हो सकते हैं। 4, 8, 12 दिनांक व मास कष्टदायक होंगे।

मीन- मीन राशि वालों के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। आपके मानसिक कामनाएं पूर्ण होंगे। संतान के लिए शुभ समय है। आपके मान-सम्मान में बढोत्तरी; व्यवसायिक कार्यों में विघ्न बाधाएं; मानसिक तनाव के साथ-साथ राजकीय भय बना रहेगा। अत्यधिक व्यय के कारण आर्थिक स्थिति डमाडोल होंगे। भूमि-वाहन का सुख प्राप्त; शत्रु और रोग पर विजय प्राप्त होंगे। कार्य क्षेत्र में प्रगति के साथ पदोन्नति; धार्मिक कार्य संपन्न होंगे; माता-पिता का स्वास्थ्य बाधायुक्त; पाणिग्रहण के लिए शुभ समय है। जीवन संगिनी बनाने से लाभ; यात्राओं में अधिक व्यय होगा; नेत्रविकार, एलर्जी एवं वायु रोग से पीड़ित होंगे; व्यापार में सफलता; नौकरी पेशा में श्रम कम; कार्यों के प्रति गतिविधियों में; सहयोग मिलेंगे; पति-पत्नी के बीच सुख की प्राप्ति; ऑफिसियल कार्यों में साकारात्मक स्थिति की प्राप्ति होगी। शत्रु उत्पन्न हो सकते हैं। 3, 6, 9, 12 दिनांक व मास कष्टदायक होंगे।

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

व्रत-त्योहार

अप्रैल

02.04.2022 वासंतीय नवरात्र प्रारंभ.कलश-स्थापन, हिन्दू नववर्ष आरंभ

04.04.2022 गण-गौरी व्रत (राजस्थान)

05.04.2022 वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत

06.04.2022 रामराज महोत्सव, श्रीपञ्चमी

07.04.2022 स्कन्दषष्ठी व्रत, सूर्यषष्ठी

08.04.2022 महानिशा, अन्नपूर्णा परिक्रमा रात्रि 08:29 से

09.04.2022 महाष्टमी व्रत, अन्नपूर्णा परिक्रमा रात्रि 10:26 तक

10.04.2022 रामनवमी, महानवमी व्रत

11.04.2022 नवरात्र व्रत पारण

12.04.2022 कामदा एकादशी व्रत (सबका)

14.04.2022 प्रदोष, अनङ्गत्रयोदशी, मेषसंक्रान्ति 11:20 दिन में, सतुसंक्रान्ति पुण्यकाल, खरमास समाप्ति, वैशाखी पर्व

16.04.2022 स्नान-दान, व्रत पूर्णिमा

19.04.2022 अंगारकी संकष्टी गणेश चतुर्थी चन्द्रोदय 09:18

23.04.2022 शर्करा सप्तमी

24.04.2022 श्री शीतलाष्टमी व्रत

26.04.2022 वरुथणी एकादशी(सबका)

28.04.2022 प्रदोष व्रत

29.04.2022 मास शिवरात्रि

30.04.2022 स्नान-दान अमावस्या

मई

03.05.2022 अक्षय तृतीया

04.05.2022 वैनायकी गणेश चतुर्थी

08.05.2022 गंगा सप्तमी, कमला-शर्करा-भानुसप्तमी

09.05.2022 दुर्गाष्टमी

10.05.2022 सीता नवमी

12.05.2022 मोहिनी एकादशी (सबका), लक्ष्मीनारायण एकादशी

13.05.2022 प्रदोष, रुक्मिणी द्वादशी, परशुराम द्वादशी

14.05.2022 नृसिंह चतुर्दशी व्रत

16.05.2022 स्नान-दान पूर्णिमा, बुद्ध पूर्णिमा, गन्धेश्वरी पूजा

19.05.2022 संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय 10:23 रात्रि

23.05.2022 शीतलाष्टमी, त्रिलोचनाष्टमी

26.05.2022 अचला एकादशी (सबका), जलक्रीड़ा एकादशी

27.05.2022 प्रदोष व्रत, वटसावित्री व्रतारम्भ

28.05.2022 मास शिवरात्रि, वटसावित्री द्वितीयदिन

29.05.2022 वटसावित्री तृतीय दिन

30.05.2022 स्नान-दान सोमवती अमावस्या (सोमी अमावस्या), फलहारिणी कालिका पूजन

जून

02.06.2022 रम्भातीज

03.06.2022 वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत, उमा चतुर्थी

04.06.2022 महादेव विवाह पंचमी, श्रुति पंचमी

05.06.2022 स्कन्दषष्ठी, अरण्यषष्ठी, शीतला षष्ठी

09.06.2022 गंगादशहरा, श्रीरामेश्वरप्रतिष्ठा

10.06.2022 निर्जला एकादशी, भीमसेनी एकादशी

12.06.2022 प्रदोष,दाक्षिणात्य वटसावित्री व्रतारम्भ

13.06.2022 व्रत पूर्णिमा, चंपक चतुर्दशी, दाक्षिणात्य वटसावित्री द्वितीयदिन

14.06.2022 स्नान-दान पूर्णिमा, दाक्षिणात्य वटसावित्री व्रत(तृतीय दिन)

17.06.2022 संकष्टी गणेश चतुर्थी चन्द्रोदय रात्रि 10:02

18.06.2022 नागपंचमी(बंगाल)

19.06.2022 कोकिला पंचमी(जैन)

21.06.2022 शीतलाष्टमी व्रत, कलाष्टमी, इन्द्राणी, त्रिलोचन पूजन

24.06.2022 योगिनी एकादशी

26.06.2022 प्रदोष व्रत

27.06.2022 मास शिवरात्रि

28.06.2022 भौमी अमावस्या, स्नान-दान

29.06.2022 स्नान-दान अमावस्या

30.06.2022 गुप्तनवरात्रारम्भ मनोरथ द्वितीया

जुलाई

01.07.2022 श्रीरामरथयात्रा

03.07.2022 रविवती वैनायकी गणेश चतुर्थी

05.07.2022 कुमार षष्ठी, स्कन्दषष्ठी, कर्दम षष्ठी

07.07.2022 परशुरामाष्टमी, खर्चीपूजा

08.07.2022 गुप्तनवरात्र समाप्त

09.07.2022 सोपपदादशमी, गिरिजा पूजा दशमी

10.07.2022 हरिशयनी एकादशी, सूर्यनारायणाय एकादशी

11.07.2022 सोम प्रदोष व्रत, वामन द्वादशी, श्रीकृष्ण द्वादशी व्रत, चतुर्मासारम्भ

13.07.2022 स्नान-दान पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा, व्यासपूजा

14.07.2022 पार्थिव व विश्वनाथ पूजन आरम्भ, मैथिलनववर्षारम्भ

15.07.2022 आशून्यशयन द्वितीय व्रत, चन्द्रोदय रात्रि 08:38

16.07.2022 संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रात्रि 09:21

18.07.2022 श्रावण सोमवार व्रतव्रत, नागपंचमी (बंगाल)

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

19.07.2022 मंगलागौरीव्रत, दुर्गा यात्रा, हनुमान दर्शन

20.07.2022 शीतला सप्तमी

24.07.2022 कामदा एकादशी (सबका)

25.07.2022 सोम प्रदोष व्रत

26.07.2022 मास शिवरात्रि

28.07.2022 स्नान-दान अमावस्या, हरियाली अमावस्या

31.07.2022 हरियाली तीज

अगस्त

01.08.2022 वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत, दुर्गा-गणपति व्रत

02.08.2022 नागपंचमी

04.08.2022 शीतला सप्तमी

08.08.2022 पुत्रदा एकादशी

09.08.2022 भौम प्रदोष

10.08.2022 आखेट त्रयोदशी

12.08.2022 रक्षाबंधन विद्वद्गणमतानुसार (उदयातिथि मुहूर्तमात्रेऽपिग्राह्य)

14.08.2022 कजरी तीज

15.08.2022 संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रात्रि 09:04

16.08.2022 कोकिला, भारती भगिनी, रक्षा पंचमी

17.08.2022 हल षष्ठी व्रत, मनसा देवी पूजन

19.08.2022 श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (सबका)

20.08.2022 श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (रोहिणी मतावलम्बी), नन्दोत्सव

23.08.2022 जया एकादशी (सबका), अघोर द्वादशी

24.08.2022 प्रदोष व्रत

25.08.2022 मास शिवरात्रि व्रत

26.08.2022 अघोर चतुर्दशी

27.08.2022 स्नान-दान अमावस्या, कुशग्रहण अमावस्या

30.08.2022 हरितालिका तीज व्रत, ढेला चौठ, चन्द्रदर्शन वर्जित

31.08.2022 वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत, गणेशोत्सव प्रारम्भ

सितम्बर

01.09.2022 ऋषि पंचमी व्रत , अरुन्धती- सप्तर्षि पूजा, रक्षा पंचमी

02.09.2022 सूर्य षष्ठी व्रत,लोलार्क कुण्ड स्नान पर्व

03.09.2022 संतान सप्तमी अपराजिता सप्तमी,महालक्ष्मी व्रत आरंभ

04.09.2022 महानन्दानवमी, महारविवारव्रत

05.09.2022 दशावतार व्रत

06.09.2022 पद्मा एकादशी, कर्मा एकादशी

07.09.2022 वामन द्वादशी व्रत

08.09.2022 प्रदोष व्रत

09.09.2022 अनन्त चतुर्दशी व्रत, व्रत पूर्णिमा

10.09.2022 स्नान-दान पूर्णिमा, उमा महेश्वर व्रत

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

11.09.2022 मज्ञालया-पितृपक्षारम्भ

13.09.2022 संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रात्रि 08:07

17.09.2022 महालक्ष्मी व्रत चन्द्रोदय रात्रि 10:45

17.09.2022 विश्वकर्मा पूजा

18.09.2022 जीवितपुत्रिका व्रत(जीवीतीया)

19.09.2022 जीवीतीया पारण

21.09.2022 इन्द्रा एकादशी

23.09.2022 प्रदोष व्रत

24.09.2022 मास शिवरात्रि व्रत

25.09.2022 स्नान-दान अमावस्या, पितृ विसर्जन, महालयासमाप्त

26.09.2022 शारदीय नवरात्रारम्भ कलश-स्थापन

29.09.2022 वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत

30.09.2022 उपांग ललिता व्रत

अक्टूबर

01.10.2022 बिल्व-निमंत्रण

02.10.2022 सरस्वती आवाहन, बिल्व-प्रवेशन, महानिशा पूजा, अन्नपूर्णा परिक्रमा सायं 06:22 से

03.10.2022 महाष्टमी व्रत, अन्नपूर्णा परिक्रमा सायं 03:04 तक

04.10.2022 महानवमी व्रत, होमादिकार्य

05.10.2022 विजयादशमी, नवरात्र व्रत पारण

06.10.2022 पापांकुशा एकादशी व्रत

07.10.2022 पद्मनाभ द्वादशी, प्रदोष व्रत

09.10.2022 स्नान-दान शरद् पूर्णिमा

13.10.2022 संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत, करवा चौथ (करक चतुर्थी) चन्द्रोदय रात्रि 08:10

अहोई अष्टमी व्रत चन्द्रोदय रात्रि 09:09

21.10.2022 रम्भा एकादशी व्रत

22.10.2022 शनि प्रदोष, धन त्रयोदशी(धनतेरस)

23.10.2022 मास शिवरात्रि, हनुमत् जन्मोत्सव सायं

24. दीपावली, महाकाली पूजा, हनुमद्दर्शन

25.10.2022 स्नान-दान भौमवती अमावस्या

26.10.2022 गोवर्धन पूजा

27.10.2022 भैयादूज, चित्रगुप्त व दवात पूजा

28.10.2022 रविषष्ठी व्रत तीन दिवसीय (नहाय-खाय), वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत

29.10.2022 रविषष्ठी व्रत का खारना

30.10.2022 रविषष्ठी व्रत सायं अर्घ्य (डाला छठ)

31.10.2022 रविषष्ठी व्रत द्वितीयार्घ्य-व्रत पारण

नवम्बर

02.11.2022 अक्षय-कुष्माण्ड-आवला नवमी व्रत

04.11.2022 हरि प्रबोधिनी एकादशी व्रत(सबका)

05.11.2022 तुलसी विवाह, शनि प्रदोष, चतुर्मास-समाप्त

07.11.2022 व्रत पूर्णिमा

08.11.2022 स्नान-दान कार्तिक पूर्णिमा, देव-दीवाली

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

11.11.2022 संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय रात्रि 08:06

13.11.2022 अन्नपूर्णा व्रतारम्भ

20.11.2022 उत्पन्ना एकादशी (सबका)

21.11.2022 सोम प्रदोष व्रत

22.11.2022 मास शिवरात्रि

23.11.2022 स्नान-दान अमावस्या

27.11.2022 वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत, रविवार व्रतारम्भ

28.11.2022 श्रीराम विवाहोत्सव, द्वितीय नागपंचमी

29.11.2022 स्कन्द-चम्पा षष्ठी व्रत

दिसम्बर

02.12.2022 महानन्दा-कल्पादि नवमी,

04.12.2022 मोक्षदा एवं मौनी एकादशी

05.12.2022 सोम प्रदोष व्रत

06.12.2022 पार्वण श्राद्ध, पिशाचमोचन श्राद्ध

07.12.2022 व्रत पूर्णिमा

08.12.2022 स्नान-दान पूर्णिमा

11.12.2022 संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रात्रि 08:45

16.12.2022 खरमासारम्भ रात्रि 08:47

19.12.2022 सफला एकादशी व्रत

21.12.2022 प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि व्रत

23.12.2022 स्नान-दान अमावस्या

25.12.2022 तुलसी पूजन दिवस

26.12.2022 वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत

जनवरी

02.01.2023 पुत्रदा एवं वैकुण्ठ एकादशी

04.01.2023 प्रदोष व्रत

06.01.2023 स्नान-दान, व्रत पूर्णिमा

07.01.2023 माघी प्रयाग मेलारम्भ

10.01.2023 संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रात्रि 08:30

15.01.2023 मकर-संक्रान्ति पुण्यकाल, खिचड़ी पर्व

18.01.2023 षटतिला एकादशी (सबका)

19.01.2023 प्रदोष व्रत

20.01.2023 मास शिवरात्रि व्रत

21.01.2023 स्नान-दान मौनी अमावस्या

25.01.2023 वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत

26.01.2023 वसन्तपञ्चमी, सरस्वती पूजा

28.01.2023 अचला सप्तमी

30.01.2023 महानन्दा-नवमी

फरवरी

01.02.2023 जया एवं मौनी एकादशी (सबका)

02.02.2023 आमलकी-भीष्म-वाराह-द्वादशी, प्रदोष व्रत

05.02.2023 स्नान-दान माघी पूर्णिमा

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

09.02.2023 संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रात्रि 08:55

16.02.2023 विजया एकादशी व्रत (सबका)

18.02.2023 प्रदोष व्रत, महा शिवरात्रि व्रत

20.02.2023 स्नान-दान सोमवती अमावस्या

23.02.2023 वैनायकी गणेश एवं संत चतुर्थी व्रत

26.02.2023 कामदा एवं भानु सप्तमी व्रत

मार्च

03.03.2023 आमलकी रंगभरी एकादशी

04.03.2023 प्रदोष व्रत

06.03.2023 व्रत पूर्णिमा, होलिका दहन रात्रि शेष 04:48

07.03.2023 स्नान-दान पूर्णिमा

08.03.2023 होली सर्वत्र, वसन्तोत्सव

10.03.2023 संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रात्रि 08:40

12.03.2023 रंग पंचमी

15.03.2023 मीन संक्रांति दिन में 08:51

18.03.2023 पापमोचनी एकादशी व्रत (सबका)

19.03.2023 प्रदोष व्रत

20.03.2023 मास शिवरात्रि व्रत

21.03.2023 स्नान-दान भौमवती अमावस्या

प्रमुख जयन्ती

02.04.2022 ऋषि गौतम जयन्ती, विश्व बंजारा दिवस,

03.04.2022 मत्स्यावतार

10.04.2022 अयोध्या परिक्रमा, रामचरितमानस जयन्ती, स्वामी नारायण जयन्ती

14.04.2022 महावीर जयंती, अम्बेडकर जयंती

16.04.2022 हनुमान प्रकटोत्सव

17.04.2022 कच्छपावतार

20.04.2022 अनुसूईया जयन्ती

23.04.2022 वीर कुँवर सिंह जयन्ती, गुरु अर्जुन देव जयन्ती

26.04.2022 वल्लभाचार्य जयन्ती, नर्मदा पंचकोसी यात्रारम्भ

30.04.2022 शुकदेव मुनि जयन्ती

01.05.2022 श्रम दिवस, महर्षि पराशर जयन्ती

02.05.2022 छत्रपति शिवाजी जयन्ती (तिथ्यानुसार)

03.05.2022 परशुराम जयंती, चारधाम यात्रा

06.05.2022 आदि शंकराचार्य जयन्ती, संत सूरदास जयन्ती

07.05.2022 रामानुजाचार्य जयन्ती

09.05.2022 मातृ दिवस, बगलामुखी देवी प्राकट्योत्सव

10.05.2022 श्री जानकी अवतार

14.05.2022 नृसिंह अवतार

15.05.2022 कूर्मावतार, छिन्नमस्ता देवी अवतार

16.05.2022 पुष्करा देवी अवतार, बुद्ध जयन्ती

17.05.2022 देवर्षि नारद जयन्ती

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

30.05.2022 शनिदेव प्राकट्योत्सव

01.06.2022 बाल सुरक्षा दिवस

05.06.2022 विश्व पर्यावरण दिवस

09.06.2022 बटुकभैरव प्राकट्योत्सव

10.06.2022 रुक्मिणी विवाह, माता गायत्री प्राकट्योत्सव

19.06.2022 पिता दिवस

21.06.2022 योग दिवस

24.06.2022 देवराहा बाबा पुण्यतिथि

19.07.2022 विश्व जनसंख्या दिवस

30.07.2022 धर्म सम्राट करपात्री जी जयन्ती

03.08.2022 मैथिलीशरण जयन्ती, कल्कि अवतार

04.08.2022 गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती

11.08.2022 हयग्रीव प्राकट्योत्सव

12.08.2022 अमरनाथ यात्रा, संस्कृत दिवस

13.08.2022 विन्ध्याञ्चल देवी प्राकट्योत्सव

15.08.2022 स्वतंत्रता दिवस

30.08.2022 वाराह प्राकट्योत्सव

05.09.2022 डॉ राधाकृष्णन जयन्ती

07.09.2022 वामन प्राकट्योत्सव

14.09.2022 हिन्दी दिवस

17.09.2022 विश्वकर्मा जी प्राकट्योत्सव

26.09.2022 महाराज अग्रसेन जयन्ती

30.09.2022 स्कन्दमाता दर्शन

03.10.2022 गाँधी-लालबहादुर शास्त्री जयन्ती

04.10.2022 राष्ट्रीय अखण्डता दिवस, बौद्ध अवतार

09.10.2022 वाल्मीकि जयन्ती, मीराबाई जयन्ती

10.10.2022 राष्ट्रीय डाक दिवस, चरखा जयन्ती

18.10.2022 राधा प्राकट्योत्सव

22.10.2022 धनवंतरी प्राकट्योत्सव

23.10.2022 हनुमान प्राकट्योत्सव

28.10.2022 विश्वामित्र जयन्ती

31.10.2022 सरदार पटेल जयन्ती, एकता दिवस

02.11.2022 अयोध्या, मथुरा परिक्रमा

08.11.2022 गुरुनानक जयन्ती, हरिहरक्षेत्र मेला

16.11.2022 कालभैरव प्राकट्योत्सव

18.11.2022 त्रिदण्डी जी पुण्यतिथि

04.12.2022 नौसेना दिवस, गीता जयन्ती

07.12.2022 झंडा दिवस, दत्तात्रेय अवतार

10.12.2022 हिन्दू अधिकार दिवस

25.12.2022 मदन मोहन मालवीय जयन्ती

12.01.2023 स्वामी विवेकानंद जयंती

14.01.2023 रामानन्दाचार्य जयन्ती, विवेकानंद जयंती (प्रा.म.)

15.01.2023 थल सेना दिवस

19.01.2023 ओशो महोत्सव

22.01.2023 श्री वल्लभाचार्य जयन्ती

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

23.01.2023 सुभाषचंद्र बोस जयन्ती

26.01.2023 वागीश्वरी देवी प्राकट्योत्सव, गणतंत्र दिवस

30.01.2023 हरसु ब्रह्मदेव जयन्ती

03.02.2023 गुरु गोरखनाथ जयन्ती

04.02.2023 करपात्री जी पुण्यतिथि

11.02.2023 पं. दीनदयाल पुण्यतिथि

13.02.2023 जानकी प्राकट्योत्सव

15.02.2023 स्वामी दयानन्द जयन्ती

18.02.2023 वैद्यनाथ प्राकट्योत्सव

22.02.2023 रामकृष्ण परमहंस जयन्ती

28.02.2023 राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

02.03.2023 लठमार होली (नन्दगाँव)

03.03.2023 लठमार होली (मथुरा)

08.03.2023 नारी शक्ति दिवस

अथ होड़ाचक्रं (मेलापकविचारोपयोगी)

नक्षत्र	अश्वि	भर	कृत्ति	रोहि	मृग	आर्द्रा	पुन	पुष्य	अश्ले	मघा	पू.फा	उ.फा	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशा	अनु	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा	उ.षा	श्रवण	धनि	शत	पू.भा	उ.भा	रेवती
अक्षर:	चु, चे, चो, ला	ली, लू, ले, लो	अ, ई, ऊ, ए	ओ वा वी वू	वे वो का की	कू घ ङ छ	के को हा ही	हू हे हो डा	डी डू डे डो	मा मी मू मे	मो टा टी टू	टे टो पा पी	पू ष ण ठ	पे पो रा री	रू रे रो ता	ती तू ते तो	ना नी नू ने	नो या यी यू	ये यो भा भी	भू धा फा ढा	भे भो जा जी	खी खू खे खो	गा गी गू गे	गो सा सी सू	से सो दा दी	दू थ झ ञ	दे दो चा ची
राशि:	मेष	मेष	मे१ वृ३	वृष	वृ२ मि२	मिथुन	मि३ क१	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सि१ क३	कन्य	क२ तु२	तुला	तु३ वृ१	वृश्च	वृश्च	धनु	धनु	ध१ म३	मकर	म२ कु२	कुं	कु३ मी१	मीन	मीन
वर्णा:	क्षत्र	क्षत्र	क्ष१ वै३	वै	वै२ शू२	शू	शू३ ब्रा१	ब्रा	ब्रा	क्षत्र	क्षत्र	क्ष१ वै३	वैश्य	वै२ शू२	शूद्र	शू३ ब्रा१	ब्रा	ब्रा	क्षत्र	क्षत्र	क्ष१ वै३	वै	वै२ शू२	शू	शू३ ब्रा१	ब्रा	ब्रा
वन्य:	चतु	चतु	चतु	चतु	च२ न२	नर	न३ ज१	जल	जल	वन	वन	व१ न३	नर	नर	नर	न३ की१	की	की	नर	न॥ चतु३ ॥	चतु	चतु१ ॥ जल२ ॥	जल २ नर२	नर	नर३ जल १	जल	जल
योनि:	अश्व	गज	मेष	सर्प	सर्प	श्वान	मार्जार	मेष	मार्जार	मूषक	मूषक	गो	महिष	व्याघ्र	महिष	व्याघ्र	मृग	मृग	श्वान	मर्कट	नकुल	मर्कट	सिंह	अश्व	सिंह	गो	गज
वैरम्	महिष	सिंह	मर्कट	नकुल	नकुल	मृग	मूषक	मर्कट	मूषक	मार्जार	मार्जार	व्याघ्र	अश्व	गो	अश्व	गो	श्वान	श्वान	मृग	मेष	सर्प	मेष	गज	महिष	गज	व्याघ्र	सिंह
राशीश:	भौम	भौम	भौ१ शु३	शु	शु२ बु२	बु	बु३ चं१	चं	चं	सूर्य	सूर्य	सू१ बु३	बु	बु२ शु२	शुक्र	शु३ भौ१	भौम	भौम	गुरु	गुरु	गु१ श३	शनि	शनि	शनि	श३ गु१	गुरु	गुरु
गण:	देव	मानव	राक्षस	मानव	देव	मानव	देव	देव	राक्षस	राक्षस	मानव	मानव	देव	राक्षस	देव	राक्षस	देव	राक्षस	राक्षस	मानव	मानव	देव	राक्षस	राक्षस	मानव	मानव	देव
नाड़ी	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

श्रीसूर्योदयकालिकपाक्षिकस्पष्टसूर्यादिग्रहाः									
दिनांक		सूर्यः	चंद्रः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः
16.04.2022	श	0.1.44.45	5.22.14.13	10.6.1.43	0.14.36.18	11.1.32.21	10.17.21.33	9.24.58.12	6.29.40.45
30.04.2022	श	0.15.22.14	0.5.46.40	10.16.27.47	1.4.8.45	11.4.36.20	11.3.22.46	9.25.44.52	6.28.56.14
16.05.2022	चं	1.0.48.23	6.28.24.13	10.28.10.43	1.10.44.36	11.7.44.18	11.21.57.7	9.26.21.49	6.28.5.21
30.05.2022	चं	1.14.12.51	1.9.16.27	11.8.23.11	1.1.1.36	11.10.8.9	0.8.27.59	9.26.36.37	6.27.20.50
14.06.2022	मं	1.18.30.8	7.21.45.33	11.19.16.1	1.7.54.24	11.12.19.41	0.26.20.20	9.26.32.20	6..26.33.7
29.06.2022	बु	2.12.44.16	2.11.54.13	11.29.42.41	1.28.52.15	11.14.2.48	1.14.15.20	9.16.7.12	6.25.45.25
13.07.2022	बु	2.26.0.23	8.15.27.7	0.9.25.23	2.23.17.48	11.15.6.44	2.0.58.45	9.25.26.53	6.25.0.54
28.07.2022	गु	3.10.15.16	3.2.22.0	0.19.32.16	3.21.0.23	11.15.39.12	2.18.58.6	9.24.28.29	6.24.13.12
12.08.2022	शु	3.24.33.54	9.23.32.40	0.28.54.0	4.16.22.2	11.15.32.1	3.7.3.24	9.23.17.24	6.23.25.30
27.08.2022	श	4.8.57.49	4.5.20.53	1.7.51.14	5.5.19.36	11.14.37.8	3.25.15.0	9.22.8.30	6.22.37.48
10.09.2022	श	4.22.30.16	10.17.8.40	1.15.10.45	5.8.45.3	11.13.14.41	4.12.28.59	9.21.17.59	6.21.53.16
25.09.2022	र	5.7.8.24	4.26.40.13	1.22.1.51	4.28.20.39	11.11.12.35	5.1.5.12	9.20.40.12	6.21.5.34
09.10.2022	र	5.20.55.45	11.10.20.40	1.27.25.18	5.4.46.31	11.9.18.9	5.18.28.27	9.20.24.20	6.20.21.3
25.10.2022	मं	6.6.50.32	6.1.39.7	2.0.8.19	5.26.11.10	11.7.33.56	6.8.23.14	9.20.27.8	6.19.30.10
08.11.2022	मं	06.20.53.26	0.16.14.13	2.2.27.51	6.19.37.59	11.6.35.26	6.25.50.55	9.20.50.3	6.18.45.39
23.11.2022	बु	7.6.3.17	6.24.10.53	2.0.25.27	7.15.40.48	11.6.14.48	7.14.34.54	9.31.30.9	6.17.57.57
08.12.2022	गु	7.21.18.26	1.20.36.40	1.25.43.48	8.8.53.18	11.6.37.56	8.3.21.56	9.22.26.1	6.17.10.15
23.12.2022	शु	8.6.37.29	8.1.35.33	1.20.17.20	8.24.14.32	11.7.37.27	8.22.10.33	9.23.37.40	6.16.22.33
06.01.2023	शु	8.20.57.2	2.11.30.40	1.17.3.36	8.21.39.9	11.9.6.49	9.9.47.55	9.24.55.51	6.15.38.1
21.01.2023	श	9.6.17.14	8.25.11.20	1.17.21.6	8.14.12.30	11.11.13.25	9.28.40.25	9.26.29.46	6.14.50.19
05.02.2023	र	9.21.34.12	3.14.3.47	1.18.27.3	8.26.46.34	11.13.46.56	10.17.21.30	9.28.14.16	6.14.2.37
20.02.2023	चं	10.6.46.32	10.3.9.20	1.22.22.48	9.19.34.46	11.16.40.14	11.5.42.44	10.0.4.51	6.13.14.44
07.03.2023	मं	10.21.52.32	4.16.32.27	1.27.15.31	10.16.32.26	11.19.53.2	11.23.50.39	10.1.51.23	6.12.27.13
21.03.2023	मं	11.5.51.23	10.26.34.13	2.3.15.33	11.12.0.30	11.23.1.46	0.10.40.13	10.3.21.21	6.11.42.41

श्रीसंवत् २०७९ शक: १९४४ सौम्यायनयाम्यगोल: वसन्तर्त्तु: चैत्र शुक्लपक्ष: दिनांक:- ०२.०४.२०२२ से १६.०४.२०२२ तक

दिनांक	वार	तिथ्यान्त:		नक्षत्रान्त:		योगान्त:		करणान्त:		योग:	सू. उ.	सू. अ.
2	श	१	11:21	रेवती	10:54	ऐन्द्र	08:14	वव	१४:०४	धाता	05:43	06:17
3	र	२	11:53	अश्विनी	12:03	वैधृति	07:30	कौ	१५:२८	आनन्द	05:42	06:18
4	चं	३	12:55	भरणी	13:40	विष्कुम्भ	07:10	गर	१८:०२	चर	05:42	06:18
5	मं	४	14:24	कृत्तिका	15:45	प्रीति	07:11	भ	२१:४७	गद	05:41	06:19
6	बु	५	16:13	रोहिणी	18:08	आयुष्यमान	07:31	वा	२६:२१	शुभ	05:41	06:19
7	गु	६	18:15	मृगशिरा	20:43	सौभाग्य	08:01	तै	३१:२८	मृत्यु	05:40	06:20
8	शु	७	20:21	आर्द्रा	23:20	शोभन	08:38	गर	०४:०६	पद्म	05:39	06:21
9	श	८	22:18	पुनर्वसु	25:48	अतिगण्ड	09:12	भ	०९:१३	छत्र	05:38	06:22
10	र	९	24:00	पुष्य	28:00	सुकर्मा	09:37	वा	१३:५०	श्रीवत्स	05:37	06:23
11	चं	१०	25:19	श्लेषा	समस्त	धृति	09:48	तै	१७:३६	सौम्य	05:37	06:23
12	मं	११	26:10	श्लेषा	05:48	शूल	09:37	व	२०:१९	आनन्द	05:36	06:24
13	बु	१२	26:31	मघा	07:10	गण्ड	09:06	वव	२१:५२	चर	05:35	06:25
14	गु	१३	26:19	पू. फा.	08:03	वृद्धि	08:12	कौ	२२:०५	गद	05:35	06:25
15	शु	१४	25:36	उ. फा.	08:23	ध्रुव व्याघात	06:53 29:11	गर	२०:५७	शुभ	05:34	06:26
16	श	१५	24:27	हस्त	08:15	हर्षण	27:07	भ	१८:४०	मृत्यु	05:33	06:27

श्रीसंवत् २०७९ शक: १९४४ सौम्यायनसौम्यगोलयो: वसन्तर्त्तु: वैशाखकृष्णपक्ष: दिनांक- १७.०४.२०२२ से ३०.०४.२०२२ तक

दि.	वार	तिथ्यान्त:		नक्षत्रान्त:		योगात्मक:		करणान्त:		योग:	सू.उ.	सू.अ.
17	र	१	22:54	चित्रा	07:40	वज्र	24:45	वा	१५:२०	पद्म	05:32	06:28
18	चं	२	21:02	स्वाति	06:47	सिद्धि	22:08	तै	११:०५	छत्र	05:32	06:28
19	मं	३	18:54	विशाखा अनुराधा	05:33 28:07	व्यतिपात	19:17	व	०६:०७	श्रीवत्स	05:31	06:29
20	बु	४	16:35	ज्येष्ठा	26:30	वरीयान	16:18	वव	००:३५	ध्वांक्ष	05:30	06:30
21	गु	५	14:11	मूल	24:50	परिध	13:15	तै	२१:४२	धूम्र	05:30	06:30
22	शु	६	11:44	पू.षा.	23:11	शिव	10:08	व	१५:३७	प्रवर्धमान	05:29	06:31
23	श	७	09:20	उ.षा.	21:37	सिद्ध साध्य	07:05 28:10	वव	०९:४१	राक्षस	05:28	06:32
24	र	८ ९	07:06 29:04	श्रवण	20:15	शुभ	25:23	कौ	०४:०५	गद	05:28	06:32
25	चं	१०	28:20	धनिष्ठा	19:08	शुक्ल	22:50	व	२६:५२	शुभ	05:27	06:33
26	मं	११	25:56	शतभिषा	18:22	ब्रह्म	20:33	वव	२२:५८	मृत्यु	05:26	06:34
27	बु	१२	24:58	पू.भा.	15:57	ऐन्द्र	18:37	कौ	२०:०२	पद्म	05:26	06:34
28	गु	१३	24:37	उ.भा.	18:00	वैधृति	17:01	गर	१८:१२	छत्र	05:25	06:35
29	शु	१४	24:25	रेवती	18:32	विष्कुम्भ	15:49	भ	१७:३४	श्रीवत्स	05:24	06:36
30	श	३०	24:57	अश्विनी	19:36	प्रीति	15:02	च	१८:१३	सौम्य	05:24	06:36

श्रीसंवत् २०७९ शक: १९४४ सौम्यायनसौम्यगोलयो: वसन्तर्त्तु: वैशाख शुक्लपक्ष: दिनांक- ०१.०५.२०२२ से १६.०५.२०२२ तक												
दिनांक	वार	तिथ्यान्त:		नक्षत्रान्त:		योगान्त:		करणान्त:		योग:	सू.उ.	सू.अ.
1	र	१	25:56	भरणी	21:08	आयुष्मान	14:40	किं	२०:०७	कालदण्ड	05:23	06:37
2	चं	२	27:23	कृत्तिका	23:08	सौभाग्य	14:38	वा	२३:१२	सुस्थिर	05:23	06:37
3	मं	३	29:10	रोहिणी	25:27	शोभन	14:55	तै	२७:१६	मातङ्ग	05:22	06:38
4	बु	४	समस्त	मृगशिरा	28:00	अतिगण्ड	15:24	व	३२:०२	अमृत	05:21	06:38
5	गु	४	07:10	आर्द्रा	समस्त	सुकर्मा	16:02	भ	०४:३२	काण	05:21	06:39
6	शु	५	09:13	आर्द्रा	06:37	धृति	16:39	वा	०९:४३	पद्म	05:20	06:40
7	श	६	11:10	पुनर्वसु	09:10	शूल	17:08	तै	१४:३५	छत्र	05:20	06:40
8	र	७	12:50	पुष्य	11:25	गण्ड	17:23	व	१८:४७	श्रीवत्स	05:19	06:41
9	चं	८	14:06	श्लेषा	13:19	वृद्धि	17:18	वव	२१:५९	सौम्य	05:18	06:42
10	मं	९	14:56	मघा	14:47	ध्रुव	16:55	कौ	२४:०५	कालदण्ड	05:18	06:42
11	बु	१०	15:13	पू. फा.	15:45	व्याघात	16:07	गर	२४:५२	सुस्थिर	05:17	06:43
12	गु	११	15:01	उ. फा.	16:11	हर्षण	14:55	भ	२४:१९	मातङ्ग	05:17	06:43
13	शु	१२	14:18	हस्त	16:09	वज्र	13:18	वा	२२:३४	अमृत	05:16	06:44
14	श	१३	13:08	चित्रा	15:41	सिद्धि	11:22	तै	१९:३९	काण	05:16	06:44
15	र	१४	11:33	स्वाती	14:51	व्यतिपात	09:04	व	१५:४६	लुम्बक	05:15	06:45
16	चं	१५	09:40	विशाखा	13:42	वरीयान परिध	06:31 27:45	वव	११:०३	मित्र	05:15	06:45

श्रीसंवत् २०७९ शक: १९४४ सौम्यायनसौम्यगोलयो: ग्रीष्मर्त्तु: ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष: दिनांक- १७.०५.२०२२ से ३०.०५.२०२२ तक

दिनांक	वार	तिथ्यान्त:		नक्षत्रान्त:		योगान्त:		करणान्त:		योग:	सू.उ.	सू.अ.
17	मं	१ २	07:30 29:11	अनुराधा	12:16	शिव	24:49	कौ	०५:४१	वज्र	05:14	06:46
18	बु	३	26:45	ज्येष्ठा	10:42	सिद्ध	21:48	व	२६:५०	ध्वांक्ष	05:14	06:46
19	गु	४	24:16	मूल	09:03	साध्य	18:43	वव	२०:४३	धूम्र	05:13	06:47
20	शु	५	21:52	पू. षा.	07:23	शुभ	15:41	कौ	१८:३८	प्रवर्धमान	05:13	06:47
21	श	६	19:34	उ. षा. श्रवण	05:47 28:23	शुक्ल	12:44	गर	०८:४६	राक्षस	05:12	06:48
22	र	७	17:29	धनिष्ठा	27:13	ब्रह्म	09:57	भ	०३:१९	मातङ्ग	05:12	06:48
23	चं	८	15:44	शतभिषा	26:23	ऐन्द्र वैधृति	07:22 29:04	कौ	२६:२२	अमृत	05:11	06:49
24	मं	९	14:18	पू. भा.	25:53	विष्कुम्भ	27:05	गर	२२:४८	काण	05:11	06:49
25	बु	१०	13:17	उ. भा.	25:51	प्रीति	23:27	भ	२०:१५	लुम्बक	05:11	06:49
26	गु	११	12:44	रेवती	26:16	आयुष्यमान	24:12	वा	१८:५६	मित्र	05:10	06:50
27	शु	१२	12:42	अश्विनी	27:13	सौभाग्य	23:22	तै	१८:५०	वज्र	05:10	06:50
28	श	१३	13:10	भरणी	28:39	शोभन	22:55	व	२०:०३	ध्वांक्ष	05:09	06:51
29	र	१४	14:07	कृत्तिका	समस्त	अतिगण्ड	22:50	श	२२:२४	धूम्र	05:09	06:51
30	चं	३०	15:32	कृत्तिका	06:33	सुकर्मा	22:43	नाग	२५:५७	सुस्थिर	05:09	06:51

श्रीसंवत् २०७९ शक: १९४४ सौम्यायनसौम्यगोलयो: ग्रीष्मर्त्तु: ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष: दिनांक- ३१.०५.२०२२ से १४.०६.२०२२ तक												
दिनांक	वार	तिथ्यान्त:		नक्षत्रान्त:		योगान्त:		करणान्त:		योग:	सू.उ	सू.अ.
31	मं	१	17:16	रोहिणी	08:48	धृति	23:35	वव	३०:१९	मातङ्ग	05:08	06:52
1	बु	२	19:14	मृगशिरा	11:20	शूल	24:13	वा	०२:४७	अमृत	05:08	06:52
2	गु	३	21:17	आर्द्रा	13:58	गण्ड	24:53	तै	०७:४९	काण	05:08	06:52
3	शु	४	23:11	पुनर्वसु	16:31	वृद्धि	25:25	व	१२:४६	लुम्बक	05:07	06:53
4	श	५	24:50	पुष्य	18:53	ध्रुव	25:47	वव	१७:१४	मित्र	05:07	06:53
5	र	६	26:07	अश्लेषा	20:53	व्याघात	25:49	कौ	२०:५४	वज्र	05:07	06:53
6	चं	७	26:56	मघा	22:26	हर्षण	25:31	गर	२३:३१	ध्वांक्ष	05:07	06:53
7	मं	८	27:13	पू. फा.	23:30	वज्र	24:48	भ	२४:५५	धूम्र	05:06	06:54
8	बु	९	27:00	उ. फा.	24:04	सिद्धि	23:41	वा	२५:०२	प्रवर्धमान	05:06	06:54
9	गु	१०	26:18	हस्त	24:08	व्यतिपात	22:10	तै	२३:५२	राक्षस	05:06	06:54
10	शु	११	25:08	चित्रा	23:45	वरीयान	20:18	व	२१:३२	मुसल	05:06	06:54
11	श	१२	23:34	स्वाती	23:00	परिध	18:05	वव	१८:०८	सिद्धि	05:06	06:54
12	र	१३	21:40	विशाखा	21:53	शिव	15:36	कौ	१३:४९	उत्पात	05:05	06:55
13	चं	१४	19:31	अनुराधा	20:31	सिद्ध	12:52	गर	०८:४६	मानस	05:05	06:55
14	मं	१५	17:10	ज्येष्ठा	18:58	साध्य	09:59	भ	०३:०९	मुद्गर	05:05	06:55

श्रीसंवत् २०७९ शक: १९४४ सौम्यायनसौम्यगोलयो: ग्रीष्मर्त्तु: आषाढ़कृष्णपक्ष: दिनांक- १५.०६.२०२२ से २९.०६.२०२२ तक

दिनांक	वार	तिथ्यान्त:		नक्षत्रान्त:		योगान्त:		करणान्त:		योग:	सू.उ.	सू.अ.
15	बु	१	14:43	मूल	17:20	शुभ शुक्ल	06:59 27:55	कौ	२४:०५	ध्वज	05:05	06:55
16	गु	२	12:14	पू.षा.	15:39	ब्रह्म	24:54	गर	१७:५३	धाता	05:05	06:55
17	शु	३	09:48	उ.षा	14:02	ऐन्द्र	21:56	भ	११:४७	आनन्द	05:05	06:55
18	श	४	07:29	श्रवण	12:35	वैधृति	19:07	वा	०६:०१	सुस्थिर	05:05	06:55
19	र	५ ६	05:24 27:35	धनिष्ठा	11:20	विष्कुम्भ	16:31	तै	००:४८	मातङ्ग	05:05	06:55
20	चं	७	26:07	शतभिषा	10:26	प्रीति	14:11	भ	२४:२६	अमृत	05:05	06:55
21	मं	८	25:03	पू.भा.	09:51	आयुष्यमान	12:08	वा	२१:१६	काण	05:05	06:55
22	बु	९	24:28	उ.भा.	09:41	सौभाग्य	10:26	तै	१९:१२	लुम्बक	05:05	06:55
23	गु	१०	24:23	रेवती	10:01	शोभन	09:08	व	१८:२१	मित्र	05:05	06:55
24	शु	११	24:49	अश्विनी	10:50	अतिगण्ड	08:13	वव	१८:४७	वज्र	05:05	06:55
25	श	१२	25:44	भरणी	12:11	सुकर्मा	07:45	कौ	२०:२९	ध्वांक्ष	05:05	06:55
26	र	१३	27:06	कृत्तिका	13:58	धृति	07:36	गर	२३:२०	धूम्र	05:05	06:55
27	चं	१४	28:49	रोहिणी	16:10	शूल	07:49	भ	२७:११	प्रवर्धमान	05:05	06:55
28	मं	३०	समस्त	मृगशिरा	18:38	गण्ड	08:17	च	३१:४६	राक्षस	05:05	06:55
29	बु	३०	06:46	आर्द्रा	21:15	वृद्धि	08:55	नाग	०४:१२	मुसल	05:05	06:55

श्रीसंवत् २०७९ शक: १९४४ सौम्यायनसौम्यगोलयो: ग्रीष्मर्त्तु: आषाढ़ शुक्लपक्ष: दिनांक- ३०.०६.२०२२ से १३.०७.२०२२ तक												
दिनांक	वार	तिथ्यान्त:		नक्षत्रान्त:		योगान्त:		करणान्त:		योग:	सू.उ.	सू.अ.
30	गु	१	08:47	पुनर्वसु	23:50	ध्रुव	09:35	वव	०९:१५	सिद्धि	05:05	06:55
1	शु	२	10:42	पुष्य	26:13	व्याघात	10:09	कौ	१४:०३	उत्पात	05:05	06:55
2	श	३	12:21	अश्लेषा	28:19	हर्षण	10:33	गर	१८:११	मानस	05:05	06:55
3	र	४	13:40	मघा	समस्त	वज्र	10:41	भ	२१:२४	मुद्गर	05:06	06:54
4	चं	५	14:30	मघा	05:59	सिद्धि	10:26	वा	२३:२९	ध्वांक्ष	05:06	06:54
5	मं	६	14:49	पू. फा.	07:10	व्यतिपात	09:48	तै	२४:१८	धूम्र	05:06	06:54
6	बु	७	14:38	उ. फा.	07:51	वरीयान	08:46	व	२३:४९	प्रवर्धमान	05:06	06:54
7	गु	८	13:56	हस्त	08:02	परिध	07:19	वव	२२:०५	राक्षस	05:06	06:54
8	शु	९	12:48	चित्रा	07:45	शिव सिद्ध	05:31 27:21	कौ	१९:१३	मुसल	05:07	06:53
9	श	१०	11:15	स्वाती	07:04	साध्य	24:56	गर	१५:२१	सिद्धि	05:07	06:53
10	र	११	09:23	विशाखा अनुराधा	06:02 28:43	शुभ	22:15	भ	१०:३९	उत्पात	05:07	06:53
11	चं	१२ १३	07:14 28:53	ज्येष्ठा	27:12	शुक्ल	19:23	वा	०५:१७	पद्म	05:07	06:53
12	मं	१४	26:27	मूल	25:35	ब्रह्म	16:24	गर	२६:२२	छत्र	05:08	06:52
13	बु	१५	23:58	पू. षा.	23:54	ऐन्द्र	13:21	भ	२०:११	श्रीवत्स	05:08	06:52

श्रीसंवत् २०७९ शक: १९४४ सौम्यायनसौम्यगोलयो: ग्रीष्मर्त्तु: श्रावण कृष्णपक्ष: दिनांक- १४.०७.२०२२ से २८.०७.२०२२ तक												
दिनांक	वार	तिथ्यान्त:		नक्षत्रान्त:		योगान्त:		करणान्त:		योग:	सू.उ.	सू.अ.
14	गु	१	21:31	उ.षा.	22:16	वैधृति	10:18	वा	१४:०१	सौम्य	05:08	06:52
15	शु	२	19:13	श्रवण	20:47	विष्कुम्भ प्रीति	07:21 28:29	तै	०८:०३	धूम्र	05:09	06:51
16	श	३	17:05	धनिष्ठा	19:29	आयुष्यमान	25:50	व	०२:३०	प्रवर्धमान	05:09	06:51
17	र	४	15:15	शतभिषा	18:29	सौभाग्य	23:27	वा	२५:१४	राक्षस	05:09	06:51
18	चं	५	13:46	पू. भा.	17:50	शोभन	21:21	तै	२१:२९	मुसल	05:10	06:50
19	मं	६	12:39	उ. भा	17:34	अतिगण्ड	19:35	व	१८:४२	सिद्धि	05:10	06:50
20	बु	७	12:01	रेवती	17:48	सुकर्मा	18:12	वव	१७:०६	उत्पात	05:11	06:49
21	गु	८	11:53	अश्विनी	18:30	धृति	17:13	कौ	१६:४६	मानस	05:11	06:49
22	शु	९	12:26	भरणी	19:44	शूल	16:39	गर	१७:४३	मुद्गर	05:11	06:49
23	श	१०	13:10	कृत्तिका	21:25	गण्ड	16:27	भ	१९:५५	ध्वज	05:12	06:48
24	र	११	14:30	रोहिणी	23:31	वृद्धि	16:36	व	२३:१५	धाता	05:12	06:48
25	चं	१२	16:12	मृगशिरा	25:57	ध्रुव	17:01	तै	२७:२८	आनन्द	05:13	06:47
26	मं	१३	18:09	आर्द्रा	28:32	व्याघात	17:37	व	३२:२०	चर	05:13	06:47
27	बु	१४	20:12	पुनर्वसु	समस्त	हर्षण	18:17	भ	०४:५२	गद	05:14	06:46
28	गु	३०	22:08	पुनर्वसु	07:10	वज्र	18:52	च	०९:५०	सिद्धि	05:14	06:46

श्रीसंवत् २०७९ शकः १९४४ याम्यायनं सौम्यगोलः वर्षर्त्तुः श्रावणशुक्लपक्षः दिनांक- २९.०७.२०२२ से १२.०८.२०२२ तक												
दिनांक	वार	तिथ्यान्तः		नक्षत्रान्तः		योगान्तः		करणान्तः		योगः	सू.उ.	सू.अ.
29	शु	१	23:50	पुष्य	09:37	सिद्धि	19:19	किं	१४:२२	उत्पात	05:15	06:45
30	श	२	25:09	अश्लेषा	11:47	व्यतिपात	19:27	वा	१८:०७	मानस	05:15	06:45
31	र	३	26:08	मघा	13:33	वरीयान	19:16	तै	२०:५२	मुद्गर	05:16	06:44
1	चं	४	26:26	पू. फा.	14:52	परिध	18:43	व	२२:२६	ध्वज	05:16	06:44
2	मं	५	26:17	उ. फा.	15:39	शिव	17:45	वव	२२:४३	धाता	05:17	06:43
3	बु	६	25:39	हस्त	15:56	सिद्ध	16:23	कौ	२१:४३	आनन्द	05:17	06:43
4	गु	७	24:33	चित्रा	15:46	साध्य	14:38	गर	१९:३१	चर	05:18	06:42
5	शु	८	23:02	स्वाती	15:08	शुभ	12:32	भ	१६:१४	गद	05:18	06:42
6	श	९	21:12	विशाखा	14:13	शुक्ल	10:09	वा	१२:०२	शुभ	05:19	06:41
7	र	१०	19:05	अनुराधा	12:57	ब्रह्म ऐन्द्र	07:30 28:39	तै	०७:०४	मृत्यु	05:19	06:41
8	चं	११	16:46	ज्येष्ठा	11:29	वैधृति	25:41	व	०१:३१	पद्म	05:20	06:40
9	मं	१२	14:21	मूल	09:53	विष्कुम्भ	22:39	वा	२२:३०	छत्र	05:21	06:39
10	बु	१३	11:52	पू. षा.	08:11	प्रीति	19:34	तै	१६:१८	श्रीवत्स	05:21	06:39
11	गु	१४	09:27	उ. षा. श्रवण	06:34 28:00	आयुष्मान	16:35	व	१०:१२	सौम्य	05:22	06:38
12	शु	१५	07:08 28:00	धनिष्ठा	27:39	सौभाग्य	13:41	वव	०४:२४	धाता	05:22	06:38

श्रीसंवत् २०७९ शक: १९४४ याम्यायनं सौम्यगोल: वर्षर्त्तु: भाद्रपदकृष्णपक्ष: दिनांक- १३.०८.२०२२ से २७.०८.२०२२ तक												
दिनांक	**वार**	**तिथ्यान्त:**		**नक्षत्रान्त:**		**योगान्त:**		**करणान्त:**		**योग:**	**सू. उ.**	**सू. अ.**
13	श	२	27:09	शतभिषा	26:34	शोभन	10:59	तै	२६:४५	आनन्द	05:23	06:37
14	र	३	25:39	पू. भा.	25:50	अतिगण्ड	08:32	व	२२:३२	चर	05:24	06:36
15	चं	४	24:32	उ. भा.	25:28	सुकर्मा धृति	06:20 28:29	वव	१९:१४	गद	05:24	06:36
16	मं	५	23:53	रेवती	25:34	शूल	27:00	कौ	१७:००	शुभ	05:25	06:35
17	बु	६	23:44	अश्विनी	26:10	गण्ड	25:56	गर	१५:५८	मृत्यु	05:26	06:34
18	गु	७	24:06	भरणी	27:16	वृद्धि	25:16	भ	१६:१४	पद्म	05:26	06:34
19	शु	८	24:58	कृत्तिका	28:50	ध्रुव	24:58	वा	१७:४५	छत्र	05:27	06:33
20	श	९	26:19	रोहिणी	समस्त	व्याघात	25:01	तै	२०:२८	श्रीवत्स	05:28	06:32
21	र	१०	28:00	रोहिणी	06:52	हर्षण	25:21	व	२४:१३	धाता	05:28	06:32
22	चं	११	समस्त	मृगशिरा	09:23	वज्र	25:56	वव	२८:४५	आनन्द	05:29	06:31
23	मं	११	05:57	आर्द्रा	11:46	सिद्धि	26:31	वा	०१:११	चर	05:29	06:31
24	बु	१२	08:00	पुनर्वसु	14:24	व्यतिपात	27:08	तै	०६:१६	गद	05:30	06:30
25	गु	१३	10:00	पुष्य	16:55	वरीयान	27:35	व	११:१२	शुभ	05:31	06:29
26	शु	१४	11:44	अश्लेषा	19:10	परिघ	27:47	श	१५:३१	मृत्यु	05:32	06:28
27	श	३०	13:07	मघा	21:01	शिव	27:38	नाग	१८:५८	पद्म	05:32	06:28

श्रीसंवत् २०७९ शक: १९४४ याम्यायनं सौम्यगोल: वर्षर्त्तु: भाद्रपद शुक्लपक्ष: दिनांक- २८.०८.२०२२ से १०.०९.२०२२ तक											
दिनांक	वार	तिथ्यान्त:		नक्षत्रान्त:		योगान्त:		करणान्त:		योग:	सू. उ.	सू. अ.
28	र	१	14:03	पू. फा.	22:27	सिद्ध	27:10	वव	२१:१६	छत्र	05:33	06:27
29	चं	२	14:30	उ. फा.	23:22	साध्य	26:16	कौ	२२:२०	श्रीवत्स	05:34	06:26
30	मं	३	14:24	हस्त	23:44	शुभ	12:58	गर	२२:०६	सौम्य	05:34	06:26
31	बु	४	13:50	चित्रा	23:40	शुक्ल	23:16	भ	२०:३७	कालदण्ड	05:35	06:25
1	गु	५	12:46	स्वाती	23:09	ब्रह्म	21:14	वा	१७:५६	सुस्थिर	05:36	06:24
2	शु	६	11:18	विशाखा	22:18	ऐन्द्र	18:53	तै	१४:१६	मातङ्ग	05:36	06:24
3	श	७	09:31	अनुराधा	21:06	वैधृति	16:17	व	०९:४४	अमृत	05:37	06:23
4	र	८ ९	07:26 29:09	ज्येष्ठा	19:40	विष्कुम्भ	13:28	वव	०४:३१	काण	05:38	06:22
5	चं	१०	26:43	मूल	18:04	प्रीति	10:29	तै	२५:३५	लुम्बक	05:38	06:22
6	मं	११	12:16	पू. षा.	16:24	आयुष्मान सौभाग्य	07:26 28:20	व	१९:३७	मित्र	05:39	06:21
7	बु	१२	21:51	उ. षा.	14:44	शोभन	25:18	वव	१३:३०	वज्र	05:40	06:20
8	गु	१३	19:34	श्रवण	13:10	अतिगण्ड	22:23	कौ	०७:३५	ध्वज	05:41	06:19
9	शु	१४	17:27	धनिष्ठा	11:45	सुकर्मा	19:35	गर	०२:०४	धाता	05:41	06:19
10	श	१५	15:37	शतभिषा	10:35	धृति	17:03	वव	२४:४७	आनन्द	05:42	06:18

श्रीसंवत् २०७९ शक: याम्यायनं सौम्यगोल: वर्षर्त्तु: आश्विनकृष्णपक्ष: दिनांक- ११.०९.२०२२ से २५.०९.२०२२ तक											
दिनांक	वार	तिथ्यान्त:		नक्षत्रान्त:		योगान्त:		करणान्त:		योग:	सू. उ.	सू. अ.
11	र	१	14:07	पू. भा.	09:47	शूल	14:47	कौ	२१:००	चर	05:43	06:17
12	चं	२	15:01	उ. भा.	09:19	गण्ड	12:50	गर	१८:१२	गद	05:44	06:16
13	मं	३	12:22	रेवती	09:17	वृद्धि	11:14	भ	१६:३४	शुभ	05:44	06:16
14	बु	४	12:13	अश्विनी	09:45	ध्रुव	10:01	वा	१६:०९	मृत्यु	05:45	06:15
15	गु	५	12:35	भरणी	10:43	व्याघात	09:12	तै	१७:०३	पद्म	05:46	06:14
16	शु	६	13:28	कृत्तिका	12:11	हर्षण	08:47	व	१९:१४	छत्र	05:46	06:14
17	श	७	14:48	रोहिणी	14:06	वज्र	08:43	वव	२२:३३	श्रीवत्स	05:47	06:13
18	र	८	16:31	मृगशिरा	16:23	सिद्धि	08:59	कौ	२६:४८	सौम्य	05:48	06:12
19	चं	९	18:30	आर्द्रा	18:55	व्यतिपात	09:29	गर	३१:४२	कालदण्ड	05:49	06:11
20	मं	१०	20:34	पुनर्वसु	21:31	वरीयान	10:02	व	०४:१७	सुस्थिर	05:49	06:11
21	बु	११	22:35	पुष्य	24:04	परिध	10:38	वव	०९:२२	मातङ्ग	05:50	06:10
22	गु	१२	24:21	अश्लेषा	26:23	शिव	11:06	कौ	१४:०४	अमृत	05:51	06:09
23	शु	१३	25:48	मघा	28:21	सिद्ध	11:22	गर	१८:०३	काण	05:52	06:08
24	श	१४	26:46	पू. फा.	29:52	साध्य	11:17	भ	२१:०२	लुम्बक	05:52	06:08
25	र	३०	27:16	उ. फा.	समस्त	शुभ	10:53	च	२२:५१	मित्र	05:53	06:07

श्रीसंवत् २०७९ शक: याम्यायनं सौम्यगोल: शरदृतु: आश्विन शुक्लपक्ष: दिनांक- २६.०९.२०२२ से ०९.१०.२०२२ तक												
दिनांक	वार	तिथ्यान्त:		नक्षत्रान्त:		योगान्त:		करणान्त:		योग:	सू. उ.	सू. अ.
26	चं	१	27:14	उ. फा.	06:55	शुक्ल	10:04	किं	२३:२४	श्रीवत्स	05:54	06:06
27	मं	२	26:43	हस्त	07:27	ब्रह्म	08:50	वा	२२:४०	सौम्य	05:55	06:05
28	बु	३	25:41	चित्रा	07:29	ऐन्द्र वैधृति	07:12 29:13	तै	२०:४२	कालदण्ड	05:55	06:05
29	गु	४	24:16	स्वाती	07:04	विष्कुम्भ	26:56	व	१७:३८	सुस्थिर	05:56	06:04
30	शु	५	22:31	विशाखा अनुराधा	06:17 29:09	प्रीति	24:22	वव	१३:३८	मातङ्ग	05:57	06:03
1	श	६	20:28	ज्येष्ठा	27:46	आयुष्मान	21:33	कौ	०८:५२	मुसल	05:57	06:03
2	र	७	18:13	मूल	26:13	सौभाग्य	18:36	गर	०३:२८	सिद्धि	05:58	06:02
3	चं	८	15:51	पू. षा.	24:34	शोभन	15:33	वव	२४:३९	उत्पात	05:59	06:01
4	मं	९	13:25	उ. षा.	22:54	अतिगण्ड	12:26	कौ	१८:३२	मानस	06:00	06:00
5	बु	१०	11:01	श्रवण	21:17	सुकर्मा	09:31	गर	१२:३३	छत्र	06:00	06:00
6	गु	११	08:45	धनिष्ठा	19:51	धृति शूल	06:22 27:30	भ	०६:४९	श्रीवत्स	06:01	05:59
7	शु	१२ १३	06:40 28:50	शतभिषा	18:38	गण्ड	24:52	वा	०१:३४	सौम्य	06:02	05:58
8	श	१४	27:21	पू. भा.	17:45	वृद्धि	22:30	गर	२५:०८	कालदण्ड	06:03	05:57
9	र	१५	26:16	उ. भा.	17:09	ध्रुव	20:24	भ	०१:५५	सुस्थिर	06:03	05:57

श्रीसंवत् २०७९ शक: १९४४ याम्यायनं सौम्यगोल: शरद् ऋतु: कार्तिककृष्णपक्ष: दिनांक- १०.१०.२०२२ से २५.१०.२०२२ तक												
दिनांक	**वार**	**तिथ्यान्त:**		**नक्षत्रान्त:**		**योगान्त:**		**करणान्त:**		**योग:**	**सू. उ.**	**सू. अ.**
10	चं	१	25:39	रेवती	17:02	व्याघात	18:39	वा	१९:४६	मातङ्ग	06:04	05:56
11	मं	२	25:31	अश्विनी	17:23	हर्षण	17:28	तै	१८:४७	अमृत	06:05	06:55
12	बु	३	25:56	भरणी	18:14	वज्र	16:20	व	१९:०५	काण	06:06	05:54
13	गु	४	26:50	कृत्तिका	19:35	सिद्धि	15:48	वव	२०:४३	लुम्बक	06:06	05:54
14	शु	५	28:13	रोहिणी	21:24	व्यतिपात	15:35	कौ	२३:३३	मित्र	06:07	05:53
15	श	६	29:58	मृगशिरा	23:36	वरीयान	15:44	गर	२७:२५	वज्र	06:08	05:52
16	र	७	समस्त	आर्द्रा	26:03	परिध	16:07	भ	३२:०५	ध्वांक्ष	06:08	05:52
17	चं	७	07:59	पुनर्वसु	28:41	शिव	16:40	वव	०४:३४	धूम्र	06:09	05:51
18	मं	८	10:06	पुष्य	समस्त	सिद्ध	17:15	कौ	०९:५०	प्रवर्धमान	06:10	05:50
19	बु	९	12:09	पुष्य	07:17	साध्य	17:45	गर	१४:५६	मातङ्ग	06:11	05:49
20	गु	१०	13:57	अश्लेषा	09:39	शुभ	18:02	भ	१९:२५	अमृत	06:11	05:49
21	शु	११	15:25	मघा	11:44	शुक्ल	18:02	वा	२३:०२	काण	06:12	05:48
22	श	१२	16:25	पू. फा.	13:21	ब्रह्म	17:42	तै	२५:३०	लुम्बक	06:13	05:47
23	र	१३	16:56	उ. फा.	14:30	ऐन्द्र	16:57	व	२६:४८	मित्र	06:13	05:47
24	चं	१४	16:56	हस्त	15:10	वैधृति	15:50	श	२६:४६	वज्र	06:14	05:46
25	मं	३०	16:27	चित्रा	15:20	विष्कुम्भ	14:08	नाग	२५:३०	ध्वांक्ष	06:15	05:45

श्रीसंवत् २०७९ शक: १९४४ याम्यायनयाम्यगोलयो: शरदृतु: कार्तिकशुक्लपक्ष: दिनांक- २६.१०.२०२२ से ०८.११.२०२२ तक												
दिनांक	वार	तिथ्यान्त:		नक्षत्रान्त:		योगान्त:		करणान्त:		योग:	सू. उ.	सू. अ.
26	बु	१	15:27	स्वाती	15:01	प्रीति	22:23	वव	२३:०१	धूम्र	06:15	05:45
27	गु	२	14:04	विशाखा	14:19	आयुष्यमान	10:10	कौ	१९:३१	प्रवर्धमान	06:16	05:44
28	शु	३	12:21	अनुराधा	13:17	सौभाग्य शोभन	07:39 28:53	गर	१५:१०	राक्षस	06:17	05:43
29	श	४	10:20	ज्येष्ठा	11:57	अतिगण्ड	25:55	भ	१०:०७	मुसल	06:17	05:43
30	र	५ ६	08:07 29:45	मूल	10:26	सुकर्मा	22:52	वा	०४:३३	सिद्धि	06:18	05:42
31	चं	७	27:21	पू. षा.	08:48	धृति	19:45	गर	२५:३७	उत्पात	06:19	05:41
1	मं	८	25:00	उ. षा. श्रवण	07:06 29:28	शूल	16:37	भ	१९:३९	मानस	06:19	05:41
2	बु	९	22:45	धनिष्ठा	27:58	गण्ड	13:34	वा	१३:५३	मित्र	06:20	05:40
3	गु	१०	20:42	शतभिषा	26:40	वृद्धि	10:37	तै	०८:२९	वज्र	06:20	05:40
4	शु	११	18:54	पू.भा.	25:41	ध्रुव व्याघात	07:53 29:23	व	०३:३८	ध्वांक्ष	06:21	05:39
5	श	१२	17:27	उ. भा.	25:02	हर्षण	27:10	वा	२७:४३	धूम्र	06:22	05:38
6	र	१३	16:25	रेवती	24:47	वज्र	25:18	तै	२५:०५	प्रवर्धमान	06:23	05:37
7	चं	१४	15:50	अश्विनी	25:00	सिद्धि	23:47	व	२३:३७	राक्षस	06:23	05:37
8	मं	१५	15:45	भरणी	25:44	व्यतिपात	22:41	वव	२३:२३	मुसल	06:24	05:36

श्रीसंवत् २०७९ शक: १९४४ याम्यायनयाम्यगोलयो: शरदृतु: मार्गशीर्षकृष्णपक्ष: दिनांक- ०९.११.२०२२ से २३.११.२०२२ तक												
दिनांक	वार	तिथ्यान्त:		नक्षत्रान्त:		योगान्त:		करणान्त:		योग:	सू. उ.	सू. अ.
9	बु	१	16:12	कृत्तिका	26:59	वरीयान	21:59	कौ	२४:२८	सिद्धि	06:25	05:35
10	गु	२	17:09	रोहिणी	28:39	परिध	21:39	गर	२६:५१	उत्पात	06:25	05:35
11	शु	३	18:34	मृगशिरा	समस्त	शिव	21:41	भ	३०:२१	मानस	06:26	05:34
12	श	४	20:21	मृगशिरा	06:46	सिद्ध	21:59	वव	०२:३५	वज्र	06:26	05:34
13	र	५	22:25	आर्द्रा	09:11	साध्य	22:28	कौ	०७:२१	ध्वांक्ष	06:27	05:33
14	चं	६	24:33	पुनर्वसु	11:46	शुभ	23:01	गर	१२:३५	धूम्र	06:27	05:33
15	मं	७	26:38	पुष्य	14:22	शुक्ल	23:32	भ	१७:५०	प्रवर्धमान	06:28	05:32
16	बु	८	28:28	अश्लेषा	16:49	ब्रह्म	23:52	वा	२२:४२	राक्षस	06:29	05:31
17	गु	९	29:57	मघा	18:58	ऐन्द्र	23:57	तै	२६:४९	मुसल	06:29	05:31
18	शु	१०	समस्त	पू. फा.	20:41	वैधृति	23:41	व	२९:५४	सिद्धि	06:29	05:31
19	श	१०	06:58	उ. फा.	21:59	विष्कुम्भ	23:04	भ	०१:०९	उत्पात	06:30	05:30
20	र	११	07:29	हस्त	22:46	प्रीति	22:03	वा	०२:२६	मानस	06:31	05:29
21	चं	१२	07:29	चित्रा	23:02	आयुष्यमान	20:38	तै	०२:२४	मुद्गर	06:31	05:29
22	मं	१३ १४	07:00 30:00	स्वाती	22:50	सौभाग्य	18:49	व	०१:०९	ध्वज	06:32	05:28
23	बु	३०	28:38	विशाखा	22:10	शोभन	16:40	च	२६:५८	धाता	06:32	05:28

श्रीसंवत् २०७९ शक: १९४४ याम्यायनयाम्यगोलयो: हेमन्तर्त्तु: मार्गशीर्षशुक्लपक्ष: दिनांक- २४.११.२०२२ से ०८.१२.२०२२ तक												
दिनांक	वार	तिथ्यान्त:		नक्षत्रान्त:		योगान्त:		करणान्त:		योग:	सू. उ.	सू. अ.
24	गु	१	26:55	अनुराधा	21:16	अतिगण्ड	14:13	किं	२३:०५	आनन्द	06:33	05:27
25	शु	२	24:55	ज्येष्ठा	19:57	सुकर्मा	11:31	वा	१८:२५	चर	06:33	05:27
26	श	३	22:42	मूल	18:30	धृति शूल	08:35 29:31	तै	१३:०९	गद	06:33	05:27
27	र	४	20:23	पू. षा.	14:53	गण्ड	26:24	व	०७:२८	शुभ	06:34	05:26
28	चं	५	18:00	उ. षा.	15:12	वृद्धि	23:14	वव	०१:३४	मृत्यु	06:34	05:26
29	मं	६	15:41	श्रवण	13:33	ध्रुव	20:08	तै	२२:४४	लुम्बक	06:35	05:25
30	बु	७	13:27	धनिष्ठा	12:01	व्याघात	17:07	व	१७:११	मित्र	06:35	05:25
1	गु	८	11:26	शतभिषा	10:39	हर्षण	14:17	वव	१२:०७	वज्र	06:35	05:25
2	शु	९	09:41	पू. भा.	09:35	वज्र	11:41	कौ	०७:४३	ध्वांक्ष	06:36	05:24
3	श	१०	08:17	उ. भा.	08:50	सिद्धि	09:21	गर	०४:१२	धूम्र	06:36	05:24
4	र	११	07:16	रेवती	08:28	व्यतिपात वरीयान	07:20 29:40	भ	०१:३९	प्रवर्धमान	06:36	05:24
5	चं	१२	06:44	अश्विनी	08:35	परिध	28:26	वा	००:१८	राक्षस	06:37	05:23
6	मं	१३	06:43	भरणी	09:10	शिव	27:33	तै	००:१५	मुसल	06:37	05:23
7	बु	१४	07:14	कृत्तिका	10:16	सिद्ध	27:07	व	०१:३२	सिद्धि	06:37	05:23
8	गु	१५	08:14	रोहिणी	11:50	साध्य	27:00	वव	०४:०२	उत्पात	06:37	05:23

श्रीसंवत् २०७९ शक: याम्यायनयाम्यगोलयो: हेमन्तर्त्तु: पौषकृष्णपक्ष: दिनांक- ०९.१२.२०२२ से २३.१२.२०२२ तक											
दिनांक	वार	तिथ्यान्त:		नक्षत्रान्त:		योगान्त:		करणान्त:		योग:	सू. उ.	सू. अ.
9	शु	१	09:42	मृगशिरा	13:51	शुभ	27:12	कौ	०७:४२	मानस	06:37	05:23
10	श	२	11:32	आर्द्रा	16:12	शुक्ल	27:37	गर	११:१६	मुद्गर	06:38	05:22
11	र	३	13:38	पुनर्वसु	18:46	ब्रह्म	28:09	भ	१७:३०	ध्वज	06:38	05:22
12	चं	४	15:49	पुष्य	21:22	ऐन्द्र	28:40	वा	२२:५७	धाता	06:38	05:22
13	मं	५	15:55	अश्लेषा	23:52	वैधृति	29:04	तै	२८:११	आनन्द	06:39	05:21
14	बु	६	19:45	मघा	26:50	विष्कुम्भ	29:13	गर	००:२८	चर	06:39	05:21
15	गु	७	21:13	पू. फा.	27:56	प्रीति	29:04	भ	०४:३६	गद	06:39	05:21
16	शु	८	22:14	उ. फा.	29:21	आयुष्यमान	28:34	वा	०७:४२	शुभ	06:39	05:21
17	श	९	22:44	हस्त	30:15	सौभाग्य	27:40	तै	०९:३५	मृत्यु	06:39	05:21
18	र	१०	22:43	चित्रा	30:38	शोभन	26:21	व	१०:१२	पद्म	06:39	05:21
19	चं	११	22:12	स्वाती	30:33	अतिगण्ड	24:39	वव	०९:३१	छत्र	06:39	05:21
20	मं	१२	21:12	विशाखा	30:01	सुकर्मा	22:35	कौ	०७:३७	श्रीवत्स	06:39	05:21
21	बु	१३	19:48	अनुराधा	29:10	धृति	20:13	गर	०४:३८	सौम्य	06:39	05:21
22	गु	१४	18:04	ज्येष्ठा	27:57	शूल	17:35	भ	००:४३	कालदण्ड	06:39	05:21
23	शु	३०	16:03	मूल	26:31	गण्ड	14:42	नाग	२३:३०	सुस्थिर	06:39	05:21

श्रीसंवत् २०७९ शक: १९४४ याम्यायनयाम्यगोलयो: हेमन्तर्तु: पौष शुक्लपक्ष: दिनांक- २४.१२.२०२२ से ०६.०१.२०२३ तक												
दिनांक	वार	तिथ्यान्त:		नक्षत्रान्त:		योगान्त:		करणान्त:		योग:	सू. उ.	सू. अ.
24	श	१	13:51	पू. षा.	24:56	वृद्धि	11:41	वव	१७:५९	मातङ्ग	06:39	05:21
25	र	२	11:31	उ. षा.	23:16	ध्रुव व्याघात	08:33 29:22	कौ	१२:०९	अमृत	06:39	05:21
26	चं	३	09:09	श्रवण	21:36	हर्षण	26:15	गर	०६:१५	सिद्धि	06:39	05:21
27	मं	४ ५	06:49 28:38	धनिष्ठा	20:02	वज्र	23:11	भ	००:२६	उत्पात	06:39	05:21
28	बु	६	26:38	शतभिषा	18:38	सिद्धि	20:16	कौ	२२:२८	मानस	06:39	05:21
29	गु	७	24:55	पू. भा.	17:29	व्यतिपात	17:35	गर	१७:५०	मुद्गर	06:39	05:21
30	शु	८	23:33	उ. भा.	16:41	वरीयान	15:09	भ	१३:५९	ध्वज	06:39	05:21
31	श	९	22:35	रेवती	16:13	परिध	13:01	वा	११:०४	धाता	06:39	05:21
1	र	१०	22:06	अश्विनी	16:13	शिव	11:14	तै	०९:१५	आनन्द	06:39	05:21
2	चं	११	22:06	भरणी	16:40	सिद्ध	09:49	व	०८:४०	चर	06:38	05:22
3	मं	१२	22:40	कृत्तिका	17:40	साध्य	08:49	वव	०९:२३	गद	06:38	05:22
4	बु	१३	23:42	रोहिणी	19:09	शुभ	08:15	कौ	११:२३	शुभ	06:38	05:22
5	गु	१४	25:13	मृगशिरा	21:05	शुक्ल	08:00	गर	१४:३५	मृत्यु	06:38	05:22
6	शु	१५	27:06	आर्द्रा	23:22	ब्रह्म	08:06	भ	१८:४९	पद्म	06:38	05:22

श्रीसंवत् २०७९ शक: १९४४ याम्यायनयाम्यगोलयो: हेमन्तर्तु: माघकृष्णपक्ष: दिनांक- ०७.०१.२०२३ से २१.०१.२०२३ तक

दिनांक	वार	तिथ्यान्त:		नक्षत्रान्त:		योगान्त:		करणान्त:		योग:	सू. उ.	सू. अ.
7	श	१	29:11	पुनर्वसु	25:53	ऐन्द्र	08:26	वा	२३:४८	छत्र	06:37	05:23
8	र	२	समस्त	पुष्य	28:30	वैधृति	08:56	तै	२९:१०	श्रीवत्स	06:37	05:23
9	चं	२	07:23	अश्लेषा	समस्त	विष्कुम्भ	09:28	गर	०१:५४	सौम्य	06:37	05:23
10	मं	३	09:27	अश्लेषा	07:03	प्रीति	09:55	भ	०७:०५	आनन्द	06:37	05:23
11	बु	४	11:15	मघा	09:20	आयुष्यमान	10:09	वा	११:३८	चर	06:36	05:24
12	गु	५	12:42	पू. फा.	11:17	सौभाग्य	10:07	तै	१५:१४	गद	06:36	05:24
13	शु	६	13:41	उ. फा.	12:49	शोभन	09:44	व	१७:५२	शुभ	06:36	05:24
14	श	७	14:08	हस्त	13:49	अतिगण्ड	08:57	वव	१८:५२	मृत्यु	06:35	05:25
15	र	८	14:03	चित्रा	14:18	सुकर्मा धृति	07:46 30:12	कौ	१८:४२	पद्म	06:34	05:26
16	चं	९	13:29	स्वाती	14:20	शूल	28:16	गर	१७:१८	छत्र	06:34	05:26
17	मं	१०	12:28	विशाखा	13:54	गण्ड	25:59	भ	१४:४५	श्रीवत्स	06:34	05:26
18	बु	११	11:01	अनुराधा	13:06	वृद्धि	23:26	वा	११:११	सौम्य	06:33	05:27
19	गु	१२	09:16	ज्येष्ठा	11:59	ध्रुव	20:39	तै	०६:४८	कालदण्ड	06:33	05:27
20	शु	१३ १४	07:13 29:00	मूल	10:34	व्याघात	17:40	व	०१:४३	सुस्थिर	06:32	05:28
21	श	३०	26:41	पू. षा.	09:01	हर्षण	14:34	च	२३:१७	मातङ्ग	06:32	05:28

श्रीसंवत् २०७९ शक: १९४४ सौम्यायनयाम्यगोलयो: शिशिरर्त्तु: माघशुक्लपक्ष: दिनांक- २२.०१.२०२३ से ०५.०२.२०२३ तक											
दिनांक	वार	तिथ्यान्त:		नक्षत्रान्त:		योगान्त:		करणान्त:		योग:	सू. उ.	सू. अ.
22	र	१	24:18	उ. षा. श्रवण	07:21 29:41	वज्र	11:25	किं	१७:२५	अमृत	06:31	05:29
23	चं	२	21:57	धनिष्ठा	28:05	सिद्धि व्यतिपात	08:16 29:11	वा	११:३५	शुभ	06:31	05:29
24	मं	३	19:48	शतभिषा	26:38	वरीयान	26:13	तै	०५:५८	मृत्यु	06:30	05:30
25	बु	४	17:50	पू. भा.	25:25	परिध	23:27	व	००:४८	पद्म	06:30	05:30
26	गु	५	16:09	उ. भा.	24:32	शिव	20:56	वा	२४:१०	छत्र	06:29	05:31
27	शु	६	14:49	रेवती	23:59	सिद्ध	18:43	तै	२०:५०	श्रीवत्स	06:29	05:31
28	श	७	13:53	अश्विनी	23:51	साध्य	16:48	व	१८:३२	सौम्य	06:28	05:32
29	र	८	13:27	भरणी	24:14	शुभ	15:17	वव	१७:२८	कालदण्ड	06:28	05:32
30	चं	९	13:30	कृत्तिका	25:05	शुक्ल	14:09	कौ	१७:३८	सुस्थिर	06:27	05:33
31	मं	१०	14:07	रोहिणी	26:29	ब्रह्म	13:26	गर	१९:१०	मातङ्ग	06:27	05:33
1	बु	११	15:11	मृगशिरा	28:18	ऐन्द्र	13:05	भ	२१:५२	अमृत	06:26	05:34
2	गु	१२	16:43	आर्द्रा	समस्त	वैधृति	13:05	वा	२४:४५	काण	06:25	05:35
3	शु	१३	18:36	आर्द्रा	06:30	विष्कुम्भ	13:22	तै	३०:२८	पद्म	06:25	05:35
4	श	१४	20:41	पुनर्वसु	08:58	प्रीति	13:50	गर	०३:०६	छत्र	06:24	05:36
5	र	१५	22:52	पुष्य	11:36	आयुष्यमान	14:23	भ	०८:२७	श्रीवत्स	06:24	05:36

श्रीसंवत् २०७९ शक: १९४४ सौम्यायनयाम्यगोलयो: शिशिरर्त्तु: फाल्गुनकृष्णपक्ष: दिनांक- ०६.०२.२०२३ से २०.०२.२०२३ तक											
दिनांक	वार	तिथ्यान्त:		नक्षत्रान्त:		योगान्त:		करणान्त:		योग:	सू. उ.	सू. अ.
6	चं	१	24:54	अश्लेषा	14:09	सौभाग्य	14:53	वा	१३:४५	सौम्य	06:23	05:37
7	मं	२	26:40	मघा	16:31	शोभन	15:12	तै	१८:३२	कालदण्ड	06:22	05:38
8	बु	३	28:03	पू. फा.	18:31	अतिगण्ड	15:17	व	२२:२९	सुस्थिर	06:22	05:38
9	गु	४	28:58	उ. फा.	20:10	सुकर्मा	15:00	वव	२५:२३	मातङ्ग	06:21	05:39
10	शु	५	29:22	हस्त	21:18	धृति	14:23	कौ	२७:०४	अमृत	06:20	05:40
11	श	६	29:14	चित्रा	21:56	शूल	13:22	गर	२७:२५	काण	06:20	05:40
12	र	७	28:36	स्वाती	22:04	गण्ड	11:56	भ	२६:२९	लुम्बक	06:19	05:41
13	चं	८	27:31	विशाखा	21:44	वृद्धि	10:12	वा	२४:२३	मित्र	06:18	05:42
14	मं	९	26:04	अनुराधा	21:00	ध्रुव व्याघात	07:58 29:33	तै	२१:१४	वज्र	06:18	05:42
15	बु	१०	24:15	ज्येष्ठा	19:56	हर्षण	26:51	व	१७:१०	ध्वांक्ष	06:17	05:43
16	गु	११	22:11	मूल	18:36	वज्र	23:56	वव	१२:२२	धूम्र	06:16	05:44
17	शु	१२	19:57	पू. षा.	17:04	सिद्धि	20:54	कौ	०७:००	प्रवर्धमान	06:16	05:44
18	श	१३	17:35	उ. षा.	15:26	व्यतिपात	17:46	गर	०१:१६	राक्षस	06:15	05:45
19	र	१४	15:11	श्रवण	13:44	वरीयान	14:37	श	२२:२३	गद	06:14	05:46
20	चं	३०	12:52	धनिष्ठा	12:08	परिध	11:32	नाग	१६:३६	शुभ	06:14	05:46

श्रीसंवत् २०७९ शक: १९४४ सौम्यायनयाम्यगोलयो: शिशिरर्त्तु: फाल्गुनशुक्लपक्ष: दिनांक- २१.०२.२०२३ से ०७.०३.२०२३ तक												
दिनांक	वार	तिथ्यान्त:		नक्षत्रान्त:		योगान्त:		करणान्त:		योग:	सू. उ.	सू. अ.
21	मं	१	10:41	शतभिषा	10:38	शिव सिद्ध	08:32 29:23	वव	११:०९	मृत्यु	06:13	05:47
22	बु	२	08:42	पू. भा.	09:21	साध्य	27:08	कौ	०६:१४	पद्म	06:12	05:48
23	गु	३ ४	07:01 29:42	उ. भा.	08:23	शुभ	24:49	गर	०२:०५	छत्र	06:11	05:49
24	शु	५	28:48	रेवती	07:46	शुक्ल	22:50	वव	२७:४०	श्रीवत्स	06:11	05:49
25	श	६	28:23	अश्विनी	07:32	ब्रह्म	21:12	कौ	२६:०३	सौम्य	06:10	05:50
26	र	७	28:47	भरणी	07:48	ऐन्द्र	19:57	गर	२५:३९	कालदण्ड	06:09	05:51
27	चं	८	28:41	कृत्तिका	08:35	वैधृति	19:07	भ	२६:०४	सुस्थिर	06:09	05:51
28	मं	९	समस्त	रोहिणी	09:51	विष्कुम्भ	18:42	वा	२८:१४	मातङ्ग	06:08	05:52
1	बु	९	06:09	मृगशिरा	11:34	प्रीति	18:37	कौ	००:०६	अमृत	06:07	05:53
2	गु	१०	07:42	आर्द्रा	13:42	आयुष्यमान	18:50	गर	०४:००	काण	06:06	05:54
3	शु	११	09:36	पुनर्वसु	16:09	सौभाग्य	19:17	भ	०८:४४	लुम्बक	06:06	05:54
4	श	१२	11:41	पुष्य	18:45	शोभन	19:50	वा	१४:०१	मित्र	06:05	05:55
5	र	१३	13:49	अश्लेषा	21:20	अतिगण्ड	20:23	तै	१९:२२	वज्र	06:04	05:56
6	चं	१४	15:48	मघा	23:45	सुकर्मा	20:47	व	२४:२३	ध्वांक्ष	06:03	05:57
7	मं	१५	17:31	पू. फा.	25:54	धृति	20:59	वव	२८:४१	धूम्र	06:03	05:57

श्रीसंवत् २०७९ शक: १९४४ सौम्यायनयाम्यगोलयो: शिशिरर्त्तु: चैत्रकृष्णपक्ष: दिनांक- ०८.०३.२०२३ से २१.०३.२०२३ तक												
दिनांक	वार	तिथ्यान्त:		नक्षत्रान्त:		योगान्त:		करणान्त:		योग:	सू. उ.	सू. अ.
8	बु	१	18:50	उ. फा.	27:36	शूल	20:50	वा	००:२०	प्रवर्धमान	06:02	05:58
9	गु	२	19:52	हस्त	28:50	गण्ड	20:32	तै	०३:०६	राक्षस	06:01	05:59
10	शु	३	20:02	चित्रा	29:35	वृद्धि	19:29	व	०४:३८	मुसल	06:01	05:59
11	श	४	19:49	स्वाती	29:50	ध्रुव	18:12	वव	०४:४८	सिद्धि	06:00	06:00
12	र	५	19:09	विशाखा	29:35	व्याघात	16:32	कौ	०३:४४	उत्पात	05:59	06:01
13	चं	६	18:00	अनुराधा	28:56	हर्षण	14:31	गर	०१:३०	मानस	05:58	06:02
14	मं	७	16:30	ज्येष्ठा	27:57	वज्र	12:12	वव	२६:२०	मुद्गर	05:58	06:02
15	बु	८	14:39	मूल	26:40	सिद्धि	09:35	कौ	२१:४४	ध्वज	05:57	06:03
16	गु	९	12:32	पू. षा.	25:10	व्यतिपात वरीयान	06:45 27:47	गर	१६:३०	धाता	05:56	06:04
17	शु	१०	10:15	उ. षा.	23:33	परिघ	24:42	भ	१०:५०	आनन्द	05:55	06:05
18	श	११ १२	07:53 29:30	श्रवण	21:52	शिव	21:35	वा	०४:५६	सुस्थिर	05:55	06:05
19	र	१३	27:08	धनिष्ठा	20:14	सिद्ध	18:29	गर	२६:०२	मातङ्ग	05:54	06:06
20	चं	१४	24:56	शतभिषा	18:42	साध्य	15:29	भ	२०:२२	अमृत	05:53	06:07
21	मं	३०	22:56	पू. भा.	17:23	शुभ	12:37	च	१५:०९	काण	05:52	06:08

अधिकमास और क्षयमास का वर्णन

भारतीय कालगणना सूक्ष्म और सर्वोत्कृष्ट काल गणना है। कालगणना में सौरमास और चान्द्रमास के समायोजन के लिए अधिकमास और क्षयमास का विधान है।

अधिकमास और क्षयमास का लक्षण- जिस चान्द्रमास में सूर्य कि संक्रांति नहीं होती वह मलमास है अर्थात सूर्य के संक्रांति रहित मास अधिकमास होता है और जिस चान्द्रमास में सूर्य के दो संक्रांति हो, उस चान्द्रमास को क्षयमास कहते हैं। क्षयमास प्रायः कार्तिकादि तीन माह में होता है। कार्तिक, अगहन, पौष और कभी - कभी माघ मास में भी होता है। जिस वर्ष में क्षयमास होता है उस वर्ष में 2 अधिकमास लगते हैं। एक तीन माह पूर्व और एक एकमाह के अनन्तर में होता है। मुहूर्तमार्तण्ड में बतलाया गया है कि यदि एक ही वर्ष में क्षयमास तथा दो अधिकमास की प्राप्ति हो तो क्षय से पूर्व अर्थात पहला अधिकमास प्राकृत होता है, अधिकमास की तरह त्याज्य नहीं होता है अर्थात उत्तर वाला अधिकमास त्याज्य होता है। ब्रह्मा जी का आदेश है कि फाल्गुन आदि आठ महिनों में से ही अधिकमास लगता है और अगहन आदि तीन माह में क्षयमास लगता है। इस मलमास में शुभ कार्य(विवाह आदि) वर्जित है।

अधिकमास में कृत्याकृत्य कर्म- गर्गाचार्यजी कहते है कि मलमास में अग्न्याधान, प्रतिष्ठा, यज्ञ, दान, व्रतादि, वेदव्रत, वृषोत्सर्ग, चूड़ाकर्म, व्रतबन्ध, देवतीर्थादि गमन, विवाह, अभिषेक, यान और गृह कर्म अर्थात् गृहारम्भ आदि कार्य नहीं करना चाहिये। सूर्योदय ग्रन्थ में कहा है कि मलमास में मरने वाले का वार्षिक श्राद्ध, तीर्थ और गजच्छायाश्राद्ध करना चाहिए। स्मृतिरत्नावली में वर्णन है, जिस काम्य प्रयोग का प्ररम्भ मलमास से पूर्व ही हो गया हो, उसके दिनों की समाप्ति में जो होना चाहिए वह इस अधिकमास में विहित है अर्थात् उसकी समाप्ति अवश्य ही संदेह रहित होकर करनी चाहिए।फल विवेक के अनुसार इस मास राजाओं के लिए यात्रा वर्जित है। वशिष्ठजी के मतानुसार इस मलमास में वापी, कुआँ, तलाबादि प्रतिष्ठा, यज्ञादि कार्य नहीं करना चाहिए। मनु के अनुसार मलमास में तीर्थश्राद्ध, दर्श श्राद्ध, प्रेतश्राद्ध, सपिण्डीकरण, चन्द्रसूर्यग्रहणीय स्नान करना चाहिए। पराशर मुनि के अनुसार गर्भस्थ की मास संज्ञा, वर्द्धापन कार्य, सेवक का मास संज्ञा, प्रेत कर्म, सपिण्डी कर्म, नित्य कर्म(प्रतिदिन) का त्याग नहीं करना चाहिए। कात्यायन स्मृति के अनुसार गर्भाधानसंस्कार से लेकर अन्नप्राशन संस्कार के अन्त तक करना तथा कर्णवेधादि क्रिया मलमास में नहीं करनी चाहिए। गणपति के अनुसार गर्भाधानसंस्कार से बालक के अन्नप्राशन संस्कार में गुरु-शुक्र अस्त और मलमास जनित दोष नहीं होता है। इसमें निश्चित काल की प्रधानता से उक्त कार्य मलमास में भी किया जायेगा।

श्राद्ध परिचय

प्रेत और पितर के निमित्त उनके आत्मा की तृप्ति के लिए श्रद्धापूर्वक जो कुछ अर्पित किया जाये, वह श्राद्ध है। मृत्यु के बाद दशगात्र, षोडशी, सपिण्डन तक मृत व्यक्ति की प्रेत संज्ञा होती है। सपिण्डन के बाद वह पितरों में सम्मिलित हो जाता है। शास्त्रों में निर्देश है कि माता- पिता का नाम, गोत्र उच्चारण कर मंत्र द्वारा जो अन्नादि अर्पित किया जाता है वह उनको प्राप्त होता है। यदि अपने कर्मों के अनुसार उनको देव योनि प्राप्त होता है तो उन्हें अमृत रुप में मिलता है।

गन्धर्व लोक में भोग्यरूप, पशु योनि में तृणरूप में, सर्पयोनि में वायुरूप में, यक्षयोनि में पेयरूप में, दानवयोनि में मांसरूप में, प्रेतयोनि में रूधिररुप में, मनुष्ययोनि में अन्न आदि रूप में उपलब्ध होता है। जब पितर यह सुनते हैं कि

श्राद्धकाल उपस्थित हो गया तो वे श्राद्धस्थल पर पहुँचकर, ब्राह्मण के साथ वायुरूप में भोजन करते हैं। पितृपक्ष के आरम्भ होने पर पितृगण अपने द्वार पर आकर बैठ जाते हैं। यदि उस दिन उनका श्राद्ध नहीं किया जाता है तो वे क्रोधित होकर शाप देकर लौट जाते हैं। अतः उस दिन पत्र- पुष्प, फल, जल तर्पण से यथा शक्ति उनको तृप्त करना चाहिए। श्राद्ध विमुख नहीं होना चाहिए।

श्राद्ध की परिभाषा:- महर्षि मरीचि के अनुसार प्रेत और पितरों के उद्देश्य से श्रद्धापूर्वक जो भोज्य पदार्थ दिया जाता है, वह श्राद्ध है। ब्रह्मपुराण के अनुसार देश, काल, पात्र का विचार कर श्रद्धा और विधान पूर्वक जो पितरों हेतु ब्राह्मण को दिया जाता है, वह श्राद्ध कहलाता है।

श्राद्ध की प्रशंसा:- ब्रह्मपुराण में श्राद्ध के बारे में कहा गया है कि जो अपनी सम्पत्ति के अनुकूल व्यय करता हुआ श्राद्ध करता है वह ब्राह्मण को प्रसन्न कर लेता है। श्राद्ध का फल कभी व्यर्थ नहीं जाता है। यमस्मृति के अनुसार जो लोग देवता, पितर, अग्नि और ब्राह्मण की पूजन करते हैं वे सभी प्राणियों के आत्मा विष्णु की ही आराधना करते हैं।

श्राद्ध के प्रकार:- मुख्यतः श्राद्ध दो प्रकार के होते हैं। पहला एकोदिष्ट और दूसरा पार्णव, लेकिन बाद में चार श्राद्धों को मुख्यता दी गयी है। इसमें पार्णव, एकोदिष्ट, वृद्धि और सपिण्डीकरण आतें है। आजकल यही चार श्राद्ध समाज में प्रचलित है। वृद्धि श्राद्ध का तात्पर्य नान्दीमुख श्राद्ध है। श्राद्धों की कुल संख्या बारह हैं। इसमें नित्यश्राद्ध, तर्पण और पञ्चमहायज्ञ के रूप में नित्य किया जाता है। नैमित्तिक श्राद्ध को एकोदिष्ट श्राद्ध के नाम से भी जाना जाता है। यह किसी एक व्यक्ति के लिए किया जाता है। मृत्यु के पश्चात् यही श्राद्ध होता है। प्रतिवर्ष यह मृत्यु तिथि पर भी   एकोदिष्ट ही किया जाता है। काम्यश्राद्ध किसी कामना की पूर्ति की इच्छा से किया जाता है। वृद्धि श्राद्ध पुत्र के जन्म आदि के अवसर पर किया जाता है। सपिण्डन श्राद्ध मृत्यु के बाद दशगात्र और षोडशी के पश्चात् किया जाता है। इसके द्वारा मृत व्यक्ति को प्रेतत्व से पितरत्व प्राप्त होता है। पार्वण श्राद्ध प्रतिवर्ष आश्विनकृष्णपक्ष में मृत्यु तिथि पर और अमावस्या के दिन किया जाता है। इसके अतिरिक्त अन्य पर्वों पर भी यह श्राद्ध किया जाता है। गोष्ठी श्राद्ध विद्वानों को सुखी, समृद्ध बनाने के उद्देश्य से किया जाता है। इसमें पितरों को तृप्ति होना स्वाभाविक है। शुचि श्राद्ध शारीरिक, मानसिक और अशौचादि अशुद्धि के निवारण के लिए किया जाता है। कर्मांगश्राद्ध सोमयाग, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन आदि के अवसर पर किया जाता है। दैविक श्राद्ध देवताओं के प्रसन्नता के लिए किया जाता है। यात्राश्राद्ध यात्रा के समय किया जाता है। पुष्टिश्राद्ध धन-धान्य, समृद्धि की इच्छा से किया जाता है।

श्राद्ध योग्य ब्राह्मण और स्थान:- श्राद्ध में परीक्षा करके ब्राह्मणों को आमंत्रित करना चाहिए। आमंत्रण के बाद परीक्षा करना निषेध है। श्राद्ध कभी-भी किसी दूसरे के घर, भूमि पर नहीं करना चाहिये। जिस भूमि पर किसी का स्वामित्व न हो, वहाँ श्राद्ध करना चाहिये। सार्वजनिक स्थान पर भी श्राद्ध करना चाहिये। दूसरे के घर में जो श्राद्ध किया जाता है तो श्राद्धकर्ता के पितर को कुछ भी नहीं प्राप्त होता, क्योंकि सब उस स्थान के स्वामित्व वाले(गृहस्वामी) के पितर बलात् छिन लेते हैं। दूसरे के प्रदेश में श्राद्ध करने पर प्रदेश स्वामी के पितर श्राद्ध कर्म का विनाश कर देते हैं। इसलिए तीर्थ में किये गये श्राद्ध से आठगुणा पुण्यदायक श्राद्ध अपने घर में करने से होता है। यदि किसी विवशता के कारण दूसरे के घर या भूमि पर श्राद्ध करना पड़े तो उसके स्वामी को भूमि का मूल्य अथवा किराया दे दिया जाये।

श्राद्ध न करने पर:- जहाँ श्राद्ध नहीं होता, उस कुल में दुर्बल, अल्पायु, रोगी, श्रेय नाशक, कुल को अपमानित करने वाले संतान उत्पन्न होते हैं। श्राद्ध न करने से

विश्व के सभी भागों में प्राणी विचित्र रोगों, कष्टों से ग्रस्त रहता हैं। प्रेतबाधा, अदृश्य उपद्रव से ग्रस्त लोगों पर दवा काम नहीं करती तो चिकित्सक उन्हें मानसिक केस कहकर छोड़ देते हैं। वे बेचारे भटकते रहते हैं। ऊपरी बाधा का जमावड़ा देखना हो तो मेहंदी बालाजी, पुष्कर तालाब, हरसू ब्रह्म, पिशाच मोचन, गया जी आदि स्थान पर जाकर देख सकते हैं। श्राद्ध न करने से वंश समाप्त होने का भय रहता है। रोगी होकर लोग अल्पायु होने लगते हैं और भूतपूजक बन जाते है। जिस वंश के पितरगण मुक्त नहीं होते उसके वंशधर मोक्ष नहीं प्राप्त कर सकते। मोक्ष तो दूर उनका पुनर्जन्म तक नहीं हो पाता। अंततः भागवत महापुराण का सप्ताह यज्ञ करना पड़ता है।

श्राद्ध से संबंधित आवश्यक जानकारी:-

वास्तु शास्त्र

यहाँ पर कुछ वास्तुशास्त्र के सिद्धांत पर कुछ सरल और जीवनोपयोगी सूत्र दिये जा रहे हैं।

1. जिस भूमि का धनत्व न हो, जो मिट्टी ठोस न हो, जो दलदली हो, जमीन में दरारें हो, रेतीली हो, दीमक हो, पोली हो, जहाँ शल्य हो, उस भूमि पर घर नहीं बनाना चाहिये।

2. वर्गाकार, आयताकार, भद्रासन व वृताकार भूखण्ड पर सभी प्रकार के भवनों का निर्माण किया जा सकता है।

3. गोमुखी भूखण्ड आवास के लिए और सिंहमुखी भूखण्ड व्यवसाय के लिए शुभ है।

1.एक खुरवाले का, ऊँटनी, मृगी का, भेड़ का, भैंस का दूध, चवरी गाय, तथा हाल की ब्यायी हुई गाय का दूध (दस दिन के भीतर) श्राद्ध में वर्जित है।

2. ब्रह्मा जी ने पशुओं की सृष्टि में सबसे पहले गाय की सृष्टि की। अत: श्राद्ध में गाय के दूध, दही, घृत(घी) को ही प्रयोग में लाना चाहिये।

3. श्राद्ध भूमि में सर्वत्र तिल बिखेरना चाहिये। इससे सभी असुरों से आक्रान्त भुमि शुद्ध हो जाती है।

4. श्राद्ध और हवन के समय एक हाथ से पिण्ड एवं आहुति दे, परंतु तर्पण दोनों हाथों से देना चाहिए।

5. श्राद्ध में अरहर, मसूर, गाजर, लहसुन, प्याज, बैंगन आदि एवं तामसी पदार्थ वर्जित है।

4. भूखण्ड की मिट्टी में पोली हो या शल्यदोष हो तो मिट्टी हटवाकर दूसरी मिट्टी डलवाकर भवन बनाना चाहिये।

5. भवनारम्भ में राहु मुख-पुँछ का विचार करके खात खोदने के पश्चात अग्निकोण में शिलान्यास करना चाहिये।

6. भूखण्ड का ढ़लान पूर्व, उत्तर, ईशानकोण में शुभ है।

7. भूखण्ड की ऊंचाई नैर्ऋत्य, पश्चिम, दक्षिण में शुभ है।

8. भूखण्ड के बीच में, नैर्ऋत्य में, पश्चिम में, आग्नेय में, पश्चिम में, दक्षिण में कुआँ, बोरिंग, भूमिगत टैंक, सैप्टिक टैंक या किसी भी प्रकार का गड्ढा शुभ नहीं है।

9. अपना भूखण्ड आसपास के जमीन से नीचा होना अशुभ और आसपास के जमीन से अपना जमीन ऊच्चा होना शुभ होता है।

10. भूखण्ड के पश्चिम, दक्षिण में ऊचे पेड़, पहाड़ी, चट्टान, टीला एवं ऊचे मकान होना शुभ है परन्तु उत्तर, पूर्व में होना अशुभ है।

11. निर्माण कार्य अग्निकोण से प्रारम्भ कर दक्षिण, पश्चिम, उत्तर, पूर्व की तरफ बढानी चाहिये।

12. निर्माण कार्य दक्षिणावर्त करते हुये, बढना चाहिये।

13. दक्षिण-पश्चिम में कम तथा उत्तर-पूर्व में अधिक खुली जगह छोड़नी चाहिये।

14. पुरानी भवन की समाग्री (ईंट, लकड़ी, खिड़की, दरवाजा आदि) का प्रयोग नये भवन में नहीं करना चाहिये। भवन में तीन से अधिक प्रकार की लकड़ी का प्रयोग नहीं करना चाहिये।

15. खुली छत के लिए भवन में उत्तर पूर्व दिशा अनुकूल होते हैं।

16. पश्चिम और दक्षिण में नौकरों का कमरा, पानी टंकी शुभ है।

17. दक्षिण और पश्चिम की दीवारें सदैव मोटी रखनी चाहिये।

18. भूखण्ड का प्रवेश द्वार उसी दिशा में बनाना चाहिये जिस दिशा में भवन का मुख्य द्वार हो।

19. भवन में द्वार पूर्व या उत्तर में रखना श्रेष्ठ है, पश्चिम में मध्यम तथा दक्षिण में अशुभ है। द्वार के ऊपर द्वार रखना सही नहीं है लेकिन तीन मंजिलों से अधिक ऊचे भवन में यह नियम लागू नहीं है।

20. भवन के द्वार पर कलश, लता, पत्र, सिंह, स्वस्तिक, ॐ, गणेश, शंकर और दुर्गाजी का कोई चित्र लगाया जाये वह शुभ है।

21. शयनकक्ष नैर्ऋत्यकोण में बनाना उत्तम रहता है। शयनकक्ष में मन्दिर कदापि नहीं रखना चाहिये।

22. उत्तर कि ओर सिर करके नहीं सोना चाहिये।

23. घर में दरवाजे एक सीध में दो से अधिक नहीं बनाने चाहिये।

24. पूजा कक्ष ईशान में, रसोईकक्ष आग्नेय में, भोजनकक्ष पश्चिम में, कोषकक्ष उत्तर में, अध्ययनकक्ष वायव्य, पूर्व, पश्चिम, उत्तर में, शयनकक्ष दक्षिण, पश्चिम, उत्तर, पूर्व में, स्नानागार पूर्व में बनवाना शुभ है।

25. भवन से जल, मल की निकासी वायव्य, उत्तर, पूर्व में होनी चाहिये।

26. जिन कन्याओं के विवाह में देर हो रही है, उनकों वायव्य कोण में शयन करना चाहिये।

27. शौचालय का निर्माण नैर्ऋत्यकोण में करना चाहिये। शौचालय का दरवाजा पूर्व या दक्षिण में रखना चाहिये।

28. गोबरगैस प्लांट उत्तर, ईशान, पूर्व या आग्नेय में रखना चाहिये।

29. शौचालय की सीट ऐसा रखना चाहिये कि शौच करते समय मुख उत्तर या दक्षिण की ओर हो।

30. कमरों में स्थायी रूप से रखी जाने वाली भारी समान दक्षिण-नैर्ऋत्य, नैर्ऋत्यको पश्चिम में रखना चाहिये।

31. सभी द्वार, खिड़कियों की उचाई एक समान सूत्र में होनी चाहिये।

32. व्यवसायिक भवन के समीप सिनेमा, चौराहे, सार्वजनिक स्थान, मंदिर रहना शुभ है।

33. मंदिर वास्तु में गर्भगृह, प्रांगण, द्वार एवं शिखर का निर्माण वास्तु के मतानुसार करना चाहिये।

34. सीढ़ियाँ दक्षिणावृत होना चाहिये। सीढ़ियों के नीचे अनुपयोगी समान रखने के लिए कोठरी बनाकर कर सकते हैं, परन्तु वह मंदिर, सोने के लिए उपयोग नहीं करना चाहिये।

35. पूर्व दिशा में स्नानघर बनाना शुभ है, लेकिन सम्मिलित शौच और स्नानघर बनाना शुभ नहीं है।

36. रसोई अथवा पूजा घर से लगा हुआ, द्वार के सामने या ऊपर शौचालय नहीं बनाना चाहिये।

37. घर के वास्तु दोष सुधारने के बाद, गृहवर्धन के बाद, मरम्मत के बाद, जीर्णोद्धार गृहप्रवेश में वास्तु शान्ति करना आवश्यक है।

38. भूखण्ड के पूर्व या उत्तर में कोई नदी या नहर हो तथा उसका प्रवाह उत्तर या पूर्व की ओर हो तो वह भूखण्ड शुभ है।

39. भूखण्ड के उत्तर, पूर्व, ईशान में भूमिगत जलस्रोत, कुआँ, तलाब, बावड़ी शुभ है।

40. घर के ईशान कोण में पूजा घर, कुआँ, बोरिंग, बच्चों का कमरा, भूमिगत वाटरटैंक शुभ है।

41. घर में दो शिवलिंग, दो शंख, दो सूर्य देव की प्रतिमा, दो गोमती चक्र, दो शालिग्राम, तीन गणेश तथा तीन देवी प्रतिमा नहीं रखनी चाहिये।

42. सीढ़ियों के नीचे पूजा घर, शौचालय, रसोई घर नहीं बनाना चाहिये।

43. घर में तिजोरी का मुख उत्तर दिशा की ओर रखना चाहिये।

कर्मकाण्ड विशेष

1.बिल्वपत्र न मिलने पर चढाये हुये बिल्वपत्र को धोकर चढाना चाहिये।

2. दूर्वा को अपनी ओर और बिल्वपत्र को नीचे मुख करके चढाना चाहिये।

3. अंगुष्ठ पर्व से लेकर बित्ता प्रमाण के प्रतिमा घर में रखनी चाहिये। इससे बड़ी नहीं।

4. गो, भूमि, तिल, स्वर्ण, घृत, वस्त्र, धान, गुड़, चाँदी और नमक । ये दस वस्तु दान के लिए कहा गया है।

5. जब गुरु, शुक्र बृद्ध, अस्त, बालक हो तथा अधिकमास, क्षयमास में बावली, तलाब, कुआँ, बोरिंग, मकान का आरम्भ और प्रतिष्ठा, व्रत का आरम्भ, उद्यापन, वधुप्रवेश, महादान, सोमयज्ञ, अष्टकाश्राद्ध, केशान्त संस्कार, देवप्रतिष्ठा, विवाह, यज्ञोपवीत, गुरूदिक्षा आदि नहीं करनी चाहिये।

6. यज्ञ में प्रतिदिन अपनी शक्ति के अनुसार ब्राह्मण का पूजन करना चाहिये, क्योंकि जबतक ब्राह्मणों का पूजन नहीं किया जाता तबतक यज्ञ पूर्ण नहीं होता।

7. पत्नी धर्म, अर्थ तथा काम की सिद्धि के लिए श्रेष्ठ साधन है। कोई भी पुरुष पत्नी-रहित यज्ञ नहीं कर सकता। धार्मिक कर्म करने योग्य नहीं हो सकता। जिसकी पत्नी दूर हो वह कुशा का पत्नी बनाकर नित्यकर्म करना चाहिये।

8. चन्दन किये किया गया कोई भी धार्मिक कार्य का फल प्राप्त नहीं होता। अत: चन्दन धारण करना आवश्यक है।

9. यज्ञ में पवित्री धारण करने से यज्ञ का फल हरण करने वाले असुर, दैत्य दसों दिशाओं में भाग जाते हैं।

10. नित्यकर्म में दो कुशों का, पितृकर्म में तीन, शान्ति कर्म में चार तथा पौष्टिक कर्म में पाँच कुशों का पवित्री धारण करना चाहिये।

11. द्विजों को शिखा और यज्ञोपवीत धारण करके धार्मिक कर्म करना चाहिये।

12. तीर्थस्नान, दान, व्रत, जप, होम आदि कोई भी सत्कर्म संकल्प करके करना चाहिये अन्यथा फल निष्फल हो जाता है।

13. गीले वस्त्र पहनकर अथवा दोनों हाथ घुटनों से बाहर करके किया गया जप, दान, होम निष्फल हो जाता है।

14. केश(शिखा) खोलकर आचमन तथा पूजन करना निषिद्ध है।

15. ताम्बा मंगलमय है। इसलिए ताम्बे के पात्र में जल आदि भगवान को अर्पण करना चाहिये।

16. पितृकर्म में चाँदी तथा देव कार्य में सोना का बहुत महत्व है।

17. पूजनादि कार्य में दीपक को स्पर्श करने के बाद हाथ धोना चाहिये।

18. शालिग्राम, तुलसी और शंख एक साथ रखने पर भगवान प्रसन्न होते हैं।

19. मनुष्य को चित्र में या घर में भगवान सूर्य के पैरों को नहीं बनवाना चाहिये।

20. कार्तवीर्य को दीप, सूर्य को नमस्कार, विष्णु को स्तुति, गणेश को तर्पण, दुर्गा को अर्चना और शिव जी को अभिषेक प्रिय है।

21. भगवान सूर्य से आरोग्य की, अग्नि से श्री की, शिव से ज्ञान की, विष्णु से मोक्ष, दुर्गा आदि से रक्षा, भैरव आदि से कठिनाइयों को पार करने की, सरस्वती से विद्या, लक्ष्मी से ऐश्वर्य-वृद्धि, पार्वती से सौभाग्य वृद्धि, शची से मंगलवृद्धि, स्कन्द से संतान और गणेश से सभी वस्तुओं की याचना करनी चाहिये।

भक्ष्याभक्ष्य पदार्थ

1. प्रतिपदा को कुष्माण्ड, द्वितीया को बृहति, तृतीया को परवल, चतुर्थी को मूली, पञ्चमी को बेल, षष्ठी को नीम (दातुन, पत्ती, फल आदि), सप्तमी को ताड़ का फल, अष्टमी को नारियल, नवमी को लौकी, दशमी को कलम्बी का शाक, एकादशी को शिम्बी(सेम), चावल, द्वादशी को पुतिका (पोई), त्रयोदशी को बैंगन, निषिद्ध है।

2. अमावस्या, पूर्णिमा, चतुर्दशी, अष्टमी, संक्रांति, रविवार और श्राद्ध के दिन तिल का तेल वर्जित है।

3. रविवार को अदरख और लाल रंग का शाक नहीं खाना चाहिये।

4. दूध के साथ मट्ठा नहीं खाना चाहिये।

5. ताम्बे के पात्र में दूध नहीं पीना चाहिये।

6. जुठी वस्तुओं में घी और नमक के साथ दूध नहीं खाना चाहिये।

7. ताम्बे के पात्र में घी और लोहे के पात्र में तेल दूषित नहीं होता।

8. लोहे के पात्र में जलपान की वस्तु नहीं रखनी चाहिये।

9. चाँदी के पात्र में रखा हुआ कपूर अभक्ष्य हो जाता है।

10. हाथ में दिया गया नमक, तेल, व्यञ्जन अभक्ष्य है।

11. बायें हाथ से भोजन नहीं परोसना चाहिये।

12. ताम्बे के पात्र में ईख का रस अभक्ष्य है।

13. ताम्बे के पात्र में घी को छोड़कर अन्य गव्य पदार्थ नहीं रखना चाहिये।

14. लहसुन, प्याज, शलगम, गाजर, कुकुरमुत्ता, सफेद बैंगन, लाल मूली और अपवित्र स्थान(शमशानादि) में उत्पन्न शाक अभक्ष्य होते हैं।

15. गाय ब्याने से सात दिन तक का दूध त्याज्य है।

विद्या प्रशंसा

सुखार्थिनः कुतोविद्या नास्ति विद्यार्थिनः सुखम् ।

सुखार्थी वा त्यजेद् विद्यां विद्यार्थी वा त्यजेत् सुखम् ॥

जिसे सुख की अभिलाषा हो (कष्ट उठाना न हो) उसे विद्या कहाँ से ? और विद्यार्थी को सुख कहाँ से ? सुख की ईच्छा रखनेवाले को विद्या की आशा छोडनी चाहिए, और विद्यार्थी को सुख की ।

न चोरहार्यं न च राजहार्यंन भ्रातृभाज्यं न च भारकारी ।

व्यये कृते वर्धते एव नित्यं विद्याधनं सर्वधन प्रधानम् ॥

विद्यारुपी धन को कोई चुरा नहीं सकता, राजा ले नहीं सकता, भाईयों में उसका भाग नहीं होता, उसका भार नहीं लगता, (और) खर्च करने से बढता है । सचमुच, विद्यारुप धन सर्वश्रेष्ठ है ।

नास्ति विद्यासमो बन्धुर्नास्ति विद्यासमः सुहृत् ।

नास्ति विद्यासमं वित्तं नास्ति विद्यासमं सुखम् ॥

विद्या जैसा बंधु नहीं, विद्या जैसा मित्र नहीं, (और) विद्या जैसा अन्य कोई धन या सुख नहीं ।

ज्ञातिभि र्वण्टयते नैव चोरेणापि न नीयते ।

दाने नैव क्षयं याति विद्यारत्नं महाधनम् ॥

यह विद्यारुपी रत्न महान धन है, जिसका वितरण ज्ञातिजनों द्वारा हो नहीं सकता, जिसे चोर ले जा नहीं सकते, और जिसका दान करने से क्षय नहीं होता ।

सर्वद्रव्येषु विद्यैव द्रव्यमाहुरनुत्तमम् ।

अहार्यत्वादनर्घ्यत्वादक्षयत्वाच्च सर्वदा ॥

सब द्रव्यों में विद्यारुपी द्रव्य सर्वोत्तम है, क्यों कि वह किसी से हरा नहीं जा सकता; उसका मूल्य नहीं हो सकता, और उसका कभी नाश नहीं होता ।

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनम् विद्या भोगकरी यशः सुखकरी विद्या गुरूणां गुरुः ।

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परं दैवतम् विद्या राजसु पूज्यते न हि धनं
विद्याविहीनः पशुः ॥

विद्या इन्सान का विशिष्ट रुप है, गुप्त धन है । वह भोग देनेवाली, यशदात्री, और सुखकारक है । विद्या गुरुओं का गुरु है, विदेश में वह इन्सान की बंधु है । विद्या बडी देवता है; राजाओं में विद्या की पूजा होती है, धन की नहीं । इसलिए विद्याविहीन पशु हि है ।

अलसस्य कुतो विद्या अविद्यस्य कुतो धनम् ।

अधनस्य कुतो मित्रममित्रस्य कुतः सुखम् ॥

आलसी इन्सान को विद्या कहाँ ? विद्याविहीन को धन कहाँ ? धनविहीन को मित्र कहाँ ? और मित्रविहीन को सुख कहाँ ?

रूपयौवनसंपन्ना विशाल कुलसम्भवाः ।

विद्याहीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुकाः ॥

रुपसंपन्न, यौवनसंपन्न, और चाहे विशाल कुल में पैदा क्यों न हुए हों, पर जो विद्याहीन हों, तो वे सुगंधरहित केसुडे के फूल की भाँति शोभा नहीं देते ।

विद्याभ्यास स्तपो ज्ञानमिन्द्रियाणां च संयमः ।

अहिंसा गुरुसेवा च निःश्रेयसकरं परम् ॥

विद्याभ्यास, तप, ज्ञान, इंद्रिय-संयम, अहिंसा और गुरुसेवा – ये परम् कल्याणकारक हैं ।

विद्या ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम्।

पात्रत्वाद्धनमाप्नोति धनाद्धर्मं ततः सुखम्॥

विद्या से विनय (नम्रता) आती है, विनय से पात्रता (सजनता) आती है पात्रता से धन की प्राप्ति होती है, धन से धर्म और धर्म से सुख की प्राप्ति होती है ।

दानानां च समस्तानां चत्वार्येतानि भूतले ।

श्रेष्ठानि कन्यागोभूमिविद्या दानानि सर्वदा ॥

सब दानों में कन्यादान, गोदान, भूमिदान, और विद्यादान सर्वश्रेष्ठ है ।

क्षणशः कणशश्चैव विद्यामर्थं च साधयेत् ।

क्षणे नष्टे कुतो विद्या कणे नष्टे कुतो धनम् ॥

एक एक क्षण गवाये बिना विद्या पानी चाहिए; और एक एक कण बचा करके धन ईकट्ठा करना चाहिए । क्षण गवानेवाले को विद्या कहाँ, और कण को क्षुद्र समजनेवाले को धन कहाँ ?

विद्या नाम नरस्य कीर्तिरतुला भाग्यक्षये चाश्रयो धेनुः कामदुधा रतिश्च विरहे नेत्रं
तृतीयं च सा ।

सत्कारायतनं कुलस्य महिमा रत्नैर्विना भूषणम् तस्मादन्यमुपेक्ष्य सर्वविषयं
विद्याधिकारं कुरु ॥

विद्या अनुपम कीर्ति है; भाग्य का नाश होने पर वह आश्रय देती है, कामधेनु है, विरह में रति समान है, तीसरा नेत्र है, सत्कार का मंदिर है, कुल-महिमा है, बगैर

रत्न का आभूषण है; इस लिए अन्य सब विषयों को छोडकर विद्या का अधिकारी बन ।

नास्ति विद्या समं चक्षु नास्ति सत्य समं तपः।

नास्ति राग समं दुखं नास्ति त्याग समं सुखं॥

विद्या के समान आँख नहीं है, सत्य के समान तपस्या नहीं है, आसक्ति के समान दुःख नहीं है और त्याग के समान सुख नहीं है ।

गुरु शुश्रूषया विद्या पुष्कलेन् धनेन वा।

अथ वा विद्यया विद्या चतुर्थो न उपलभ्यते॥

विद्या गुरु की सेवा से, पर्याप्त धन देने से अथवा विद्या के आदान-प्रदान से प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त विद्या प्राप्त करने का चौथा तरीका नहीं है ।

अर्थातुराणां न सुखं न निद्रा कामातुराणां न भयं न लज्जा ।

विद्यातुराणां न सुखं न निद्रा क्षुधातुराणां न रुचि न बेला ॥

अर्थातुर को सुख और निद्रा नहीं होते, कामातुर को भय और लज्जा नहीं होते । विद्यातुर को सुख व निद्रा, और भूख से पीडित को रुचि या समय का भान नहीं रहता ।

पठतो नास्ति मूर्खत्वं अपनो नास्ति पातकम् ।

मौनिनः कलहो नास्ति न भयं चास्ति जाग्रतः ॥

पढनेवाले को मूर्खत्व नहीं आता; जपनेवाले को पातक नहीं लगता; मौन रहनेवाले का झघडा नहीं होता; और जागृत रहनेवाले को भय नहीं होता ।

विद्याभ्यास स्तपो ज्ञानमिन्द्रियाणां च संयमः ।

अहिंसा गुरुसेवा च निःश्रेयसकरं परम् ॥

विद्याभ्यास, तप, ज्ञान, इंद्रिय-संयम, अहिंसा और गुरुसेवा – ये परम् कल्याणकारक हैं ।

विद्या वितर्को विज्ञानं स्मृतिः तत्परता क्रिया ।

यस्यैते षड्गुणास्तस्य नासाध्यमतिवर्तते ॥

विद्या, तर्कशक्ति, विज्ञान, स्मृतिशक्ति, तत्परता, और कार्यशीलता, ये छे जिसके पास हैं, उसके लिए कुछ भी असाध्य नहीं ।

गीती शीघ्री शिरः कम्पी तथा लिखित पाठकः ।

अनर्थज्ञोऽल्पकण्ठश्च षडेते पाठकाधमाः ॥

गाकर पढना, शीघ्रता से पढना, पढते हुए सिर हिलाना, लिखा हुआ पढ जाना, अर्थ न जानकर पढना, और धीमा आवाज होना ये छे पाठक के दोष हैं ।

सद्विद्या यदि का चिन्ता वराकोदर पूरणे ।

शुकोऽप्यशनमाप्नोति रामरामेति च ब्रुवन् ॥

सद्विद्या हो तो क्षुद्र पेट भरने की चिंता करने का कारण नहीं । तोता भी “राम राम” बोलने से खुराक पा हि लेता है ।

मातेव रक्षति पितेव हिते नियुंक्ते कान्तेव चापि रमयत्यपनीय खेदम् ।

लक्ष्मीं तनोति वितनोति च दिक्षु कीर्तिम् किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या ॥

विद्या माता की तरह रक्षण करती है, पिता की तरह हित करती है, पत्नी की तरह थकान दूर करके मन को रीझाती है, शोभा प्राप्त कराती है, और चारों दिशाओं में कीर्ति फैलाती है । सचमुच, कल्पवृक्ष की तरह यह विद्या क्या क्या सिद्ध नहीं करती ?

विद्याविनयोपेतो हरति न चेतांसि कस्य मनुजस्य ।

कांचनमणिसंयोगो नो जनयति कस्य लोचनानन्दम् ॥

विद्यावान और विनयी पुरुष किस मनुष्य का चित्त हरण नहीं करता ? सुवर्ण और मणि का संयोग किसकी आँखों को सुख नहीं देता ?

हर्तृ र्न गोचरं याति दत्ता भवति विस्तृता ।

कल्पान्तेऽपि न या नश्येत् किमन्यद्विद्यया विना ॥

जो चोरों के नजर पडती नहीं, देने से जिसका विस्तार होता है, प्रलय काल में भी जिसका विनाश नहीं होता, वह विद्या के अलावा अन्य कौन सा द्रव्य हो सकता है ?

द्यूतं पुस्तकवाद्ये च नाटकेषु च सक्तिता ।

स्त्रियस्तन्द्रा च निन्द्रा च विद्याविघ्नकराणि षट् ॥

जुआ, वाद्य, नाट्य (कथा/फिल्म) में आसक्ति, स्त्री (या पुरुष), तंद्रा, और निंद्रा – ये छे विद्या में विघ्नरुप होते हैं ।

सत्य प्रशंसा

अग्निना सिच्यमानोऽपि वृक्षो वृद्धिं न चाप्नुयात् ।

तथा सत्यं विना धर्मः पुष्टिं नायाति कर्हिचित् ॥

अग्नि से सींचे हुए वृक्ष की वृद्धि नहीं होती, जैसे सत्य के बिना धर्म पुष्ट नहीं होता ।

ये वदन्तीह सत्यानि प्राणत्यागेऽप्युपस्थिते ।

प्रमाणभूता भूतानां दुर्गाण्यतितरन्ति ते ॥

प्राणत्याग की परिस्थिति में भी जो सत्य बोलता है, वह प्राणियों में प्रमाणभूत है । वह संकट पार कर जाता है ।

सत्यहीना वृथा पूजा सत्यहीनो वृथा जपः ।

सत्यहीनं तपो व्यर्थमूषरे वपनं यथा ॥

उज्जड जमीन में बीज बोना जैसे व्यर्थ है, वैसे बिना सत्य की पूजा, जप और तप भी व्यर्थ है ।

भूमिः कीर्तिः यशो लक्ष्मीः पुरुषं प्रार्थयन्ति हि ।

सत्यं समनुवर्तन्ते सत्यमेव भजेत् ततः ॥

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

भूमि, कीर्ति, यश और लक्ष्मी, सत्य का अनुसरण करनेवाले पुरुष की प्रार्थना करते हैं । इस लिए सत्य को हि भजना चाहिए ।

सत्यं स्वर्गस्य सोपानं पारावरस्य नौरिव ।

न पावनतमं किञ्चित् सत्यादभ्यधिकं क्वचित् ॥

समंदर के जहाज की तरह, सत्य स्वर्ग का सोपान है । सत्य से ज़ादा पावनकारी और कुछ नहीं ।

सत्येन पूयते साक्षी धर्मः सत्येन वर्धते ।

तस्मात् सत्यं हि वक्तव्यं सर्ववर्णेषु साक्षिभिः ॥

सत्य वचन से साक्षी पावन बनता है, सत्य से धर्म बढता है । इस लिए सभी वर्णो में, साक्षी ने सत्य हि बोलना चाहिए ।

तस्याग्निर्जलमर्णवः स्थलमरिर्मित्रं सुराः किंकराः कान्तारं नगरं गिरि गृहमहिर्माल्यं मृगारि र्मृगः ।

पातालं बिलमस्त्र मुत्पलदलं व्यालः श्रृगालो विषं पीयुषं विषमं समं च वचनं सत्याञ्चितं वक्ति यः ॥

जो सत्य वचन बोलता है, उसके लिए अग्नि जल बन जाता है, समंदर जमीन, शत्रु मित्र, देव सेवक, जंगल नगर, पर्वत घर, साँप फूलों की माला, सिंह हिरन, पाताल दर, अस्त्र कमल, शेर लोमडी, झहर अमृत, और विषम सम बन जाते हैं ।

व्यायाम प्रशंसा

व्यायामात् लभते स्वास्थ्यं दीर्घायुष्यं बलं सुखं।

आरोग्यं परमं भाग्यं स्वास्थ्यं सर्वार्थसाधनम् ॥

व्यायाम से स्वास्थ्य, लम्बी आयु, बल और सुख की प्राप्ति होती है। निरोगी होना परम भाग्य है और स्वास्थ्य से अन्य सभी कार्य सिद्ध होते हैं ।

व्यायामं कुर्वतो नित्यं विरुद्धमपि भोजनम् ।

विदग्धमविदग्धं वा निर्दोषं परिपच्यते ॥

व्यायाम करने वाला मनुष्य गरिष्ठ, जला हुआ अथवा कच्चा किसी प्रकार का भी खराब भोजन क्यों न हो, चाहे उसकी प्रकृति के भी विरुद्ध हो, भलीभांति पचा जाता है और कुछ भी हानि नहीं पहुंचाता ।

शरीरोपचयः कान्तिर्गात्राणां सुविभक्तता ।

दीप्ताग्नित्वमनालस्यं स्थिरत्वं लाघवं मृजा ॥

व्यायाम से शरीर बढ़ता है । शरीर की कान्ति वा सुन्दरता बढ़ती है । शरीर के सब अंग सुड़ौल होते हैं । पाचनशक्ति बढ़ती है । आलस्य दूर भागता है । शरीर दृढ़ और हल्का होकर स्फूर्ति आती है । तीनों दोषों की (मृजा) शुद्धि होती है।

न चैनं सहसाक्रम्य जरा समधिरोहति ।

स्थिरीभवति मांसं च व्यायामाभिरतस्य च ॥

व्यायामी मनुष्य पर बुढ़ापा सहसा आक्रमण नहीं करता, व्यायामी पुरुष का शरीर और हाड़ मांस सब स्थिर होते हैं ।

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

श्रमक्लमपिपासोष्णशीतादीनां सहिष्णुता ।

आरोग्यं चापि परमं व्यायामदुपजायते ॥

श्रम थकावट ग्लानि (दुःख) प्यास शीत (जाड़ा) उष्णता (गर्मी) आदि सहने की शक्ति व्यायाम से ही आती है और परम आरोग्य अर्थात् स्वास्थ्य की प्राप्ति भी व्यायाम से ही होती है ।

न चास्ति सदृशं तेन किंचित्स्थौल्यापकर्षणम् ।

न च व्यायामिनं मर्त्यमर्दयन्त्यरयो भयात् ॥

अधिक स्थूलता को दूर करने के लिए व्यायाम से बढ़कर कोई और औषधि नहीं है, व्यायामी मनुष्य से उसके शत्रु सर्वदा डरते हैं और उसे दुःख नहीं देते ।

समदोषः समाग्निश्च समधातुमलक्रियः ।

प्रसन्नात्मेन्द्रियमनाः स्वस्थ इत्यभिधीयते ॥

जिस मनुष्य के दोष वात, पित्त और कफ, अग्नि (जठराग्नि), रसादि सात धातु, सम अवस्था में तथा स्थिर रहते हैं, मल मूत्रादि की क्रिया ठीक होती है और शरीर की सब क्रियायें समान और उचित हैं, और जिसके मन इन्द्रिय और आत्मा प्रसन्न रहें वह मनुष्य स्वस्थ है ।

शिववास ज्ञान			
शुक्लपक्ष तिथियाँ	*कृष्णपक्ष तिथियाँ*	*फलम्*	*वास*
१	७	×	श्मशाने
२	१	शुभ	गौरीसन्निधौ
३	२	×	सभायाम्
४	३	×	क्रीड़ायाम्
५	४	शुभ	कैलाशे
६	५	शुभ	वृषे
७	६	×	भोजने
८	७	×	श्मशाने
९	८, ३०	शुभ	गौरीसन्निधौ
१०	९	×	सभायाम्
११	१०	×	क्रीड़ायाम्
१२	११	शुभ	कैलाशे
१३	१२	शुभ	वृषे
१४	१३	×	भोजने
१५	१४	×	श्मशाने

अग्निवास ज्ञान														
शुक्लपक्षे				कृष्णपक्षे				र	चं	मं	बु	गु	शु	श
१	५	९	१३	२	६	१०	१४	भू	भू	×	×	भू	भू	×
२	६	१०	१४	३	७	११	३०	भू	×	×	भू	भू	×	×
३	७	११	१५	-	४	८	१२	×	×	भू	भू	×	×	भू
-	४	८	१२	१	५	९	१३	×	भू	भू	×	×	भू	भू

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

सूर्य संक्रान्ति

मेष- 14.04.2022-10:53

वृष- 15.05.2022-09:15

मिथुन-15.06.2022-19:03

कर्क- 17.07.2022-10:19

सिंह- 17.08.2022-21:45

कन्या-17.09.2022-22:43

तुला- 18.10.2022-09:40

वृश्चिक- 17.11.2022-07:11

धनु- 16.12.2022-19:14

मकर-14.01.2023-27:01

कुम्भ- 13.02.2023-13:45

मीन- 15.03.2023-08:59

विवाह मुहूर्त

17.04.2022 विवाह

19.04.2022 विवाह

20.04.2022 विवाह

21.04.2022 तिलक/विवाह

22.04.2022 तिलक/विवाह

23.04.2022 तिलक

26.04.2022 तिलक

27.04.2022 विवाह

28.04.2022 विवाह

01.05.2022 तिलक

02.05.2022 तिलक/विवाह

03.05.2022 तिलक

04.05.2022 विवाह

09.05.2022 विवाह

10.05.2022 तिलक

11.05.2022 विवाह

12.05.2022 विवाह

14.05.2022 विवाह

18.05.2022 विवाह

19.05.2022 तिलक

20.05.2022 विवाह

22.05.2022 विवाह

24.05.2022 तिलक/विवाह

25.05.2022 तिलक

26.05.2022 तिलक

31.05.2022 विवाह

05.06.2022 विवाह

06.06.2022 तिलक

07.06.2022 विवाह

08.06.2022 विवाह

09.06.2022 तिलक

10.06.2022 विवाह

11.06.2022 तिलक

12.06.2022 विवाह

14.06.2022 विवाह

15.06.2022 तिलक

20.06.2022 तिलक

21.06.2022 विवाह

22.06.2022 विवाह

25.06.2022 तिलक

27.06.2022 विवाह

03.07.2022 विवाह

04.07.2022 तिलक

06.07.2022 विवाह

08.07.2022 विवाह

24.11.2022 तिलक

25.11.2022 विवाह

26.11.2022 तिलक

01.12.2022 तिलक

02.12.2022 विवाह

03.12.2022 विवाह

06.12.2022 तिलक

07.12.2022 विवाह

08.12.2022 विवाह

13.12.2022 विवाह

14.12.2022 तिलक

15.12.2022 विवाह

15.01.2023 तिलक/विवाह

17.01.2023 विवाह

19.01.2023 विवाह

25.01.2023 तिलक

26.01.2023 विवाह

27.01.2023 तिलक

29.01.2023 तिलक

30.01.2023 तिलक/विवाह

31.01.2023 विवाह

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

01.02.2023 विवाह

06.02.2023 विवाह

07.02.2023 तिलक

08.02.2023 विवाह

09.02.2023 विवाह

10.02.2023 तिलक

12.02.2023 तिलक

13.02.2023 विवाह

15.02.2023 विवाह

16.02.2023 तिलक

17.02.2023 विवाह

21.02.2023 तिलक

22.02.2023 विवाह

26.02.2023 तिलक

27.02.2023 विवाह

28.02.2023 विवाह

05.03.2023 विवाह

06.03.2023 तिलक

07.03.2023 विवाह/तिलक

08.03.2023 विवाह

09.03.2023 विवाह

11.03.2023 विवाह

14.03.2023 विवाह

उपनयन मुहूर्त

03.04.2022

06.04.2022

11.04.2022

13.04.2022

21.04.2022

05.05.2022

06.05.2022

11.05.2022

12.05.2022

13.05.2022

17.05.2022

20.05.2022

01.06.2022

02.06.2022

09.06.2022

10.06.2022

16.06.2022

17.06.2022

30.06.2022

01.07.2022

26.01.2023

01.02.2023

02.02.2023

08.02.2023

10.02.2023

23.02.2023

24.02.2023

01.03.2023

02.03.2023

03.03.2023

09.03.2023

गृहारम्भ मुहूर्त

16.04.2022

17.04.2022

11.05.2022

12.05.2022

13.05.2022

10.08.2022

02.12.2022

03.12.2022

07.12.2022

08.12.2022

01.02.2023

10.02.2023

27.02.2023

03.03.2023

गृहप्रवेश मुहूर्त

06.05.2022

11.05.2022

12.05.2022

13.05.2022

23.05.2022

25.05.2022

26.05.2022

09.06.2022

10.06.2022

23.07.2022

25.07.2022

03.08.2022

04.08.2022

05.08.2022

10.08.2022

16.10.2022

22.10.2022

02.11.2022

05.11.2022

18.11.2022

19.11.2022

21.11.2022

30.11.2022

01.12.2022

02.12.2022

03.12.2022

18.01.2022

27.01.2023

28.01.2023

01.02.2023

17.02.2023

सनातन संस्कति

चार वेद

१. ऋग्वेद

२. यजुर्वेद

३. सामवेद

४. अथर्ववेद

अमरनाथ गुफा

छः शास्त्र

१. शिक्षा

२. कल्प

३. व्याकरण

४. निरुक्त

५. छन्द

६. ज्योतिष

कालभैरवेश्वर स्वामी मंदिर,

दश उपनिषद्

१. ईश

२. केन

३. कठ

४. प्रश्न

५. मुण्डक

६. माण्डूक्य

७. तैत्तिरीय

८. ऐतरेय

९. छान्दोग्य

१०. बृहदारण्यक

जाखू हनूमान मंदिर, शिमला

षोडश संस्कार

१. गर्भाधान

२. पुंसवन

३. सीमन्तोन्नयन

४. जातकर्म

५. नामकरण

६. निष्क्रमण

७. अन्नप्राशन

८. मुण्डन

शिव मंदिर, हिमाचल

षोडश संस्कार

९. कर्णवेध

१०. विद्यारम्भ

११. उपनयन

१२. वेदारम्भ

१३. केशान्त

१४. समावर्तन

१५. विवाह

१६. अन्त्येष्टि

हनुमान प्रतिमा, महाराष्ट्र

आचार्यं च प्रवक्तारं पितरं मातरं गुरुम्।
न हिंस्याद् ब्राह्मणान्गाश्च सर्वांश्चैव तपस्विन:॥

आचार्य, वेदादि का व्याख्यानकर्ता , पिता, माता, गुरु, ब्राह्मण, गौ और सब (प्रकार के) तपस्वी; इनकी हिंसा (इनके प्रतिकूल आचरण) न करें।

मुरुदेश्वर महादेव, कर्नाटक

वर्णानां
ब्राह्मणो गुरु॥
वर्णों में श्रेष्ठ
ब्राह्मण है।
पतिरेव गुरु:
स्त्रिणां॥
स्त्रियों का गुरु
उसका पति ही
है।

श्री वीरनारायण मंदिर, कर्नाटक

श्रीविष्णु प्रतिमा, इंडोनेशिया
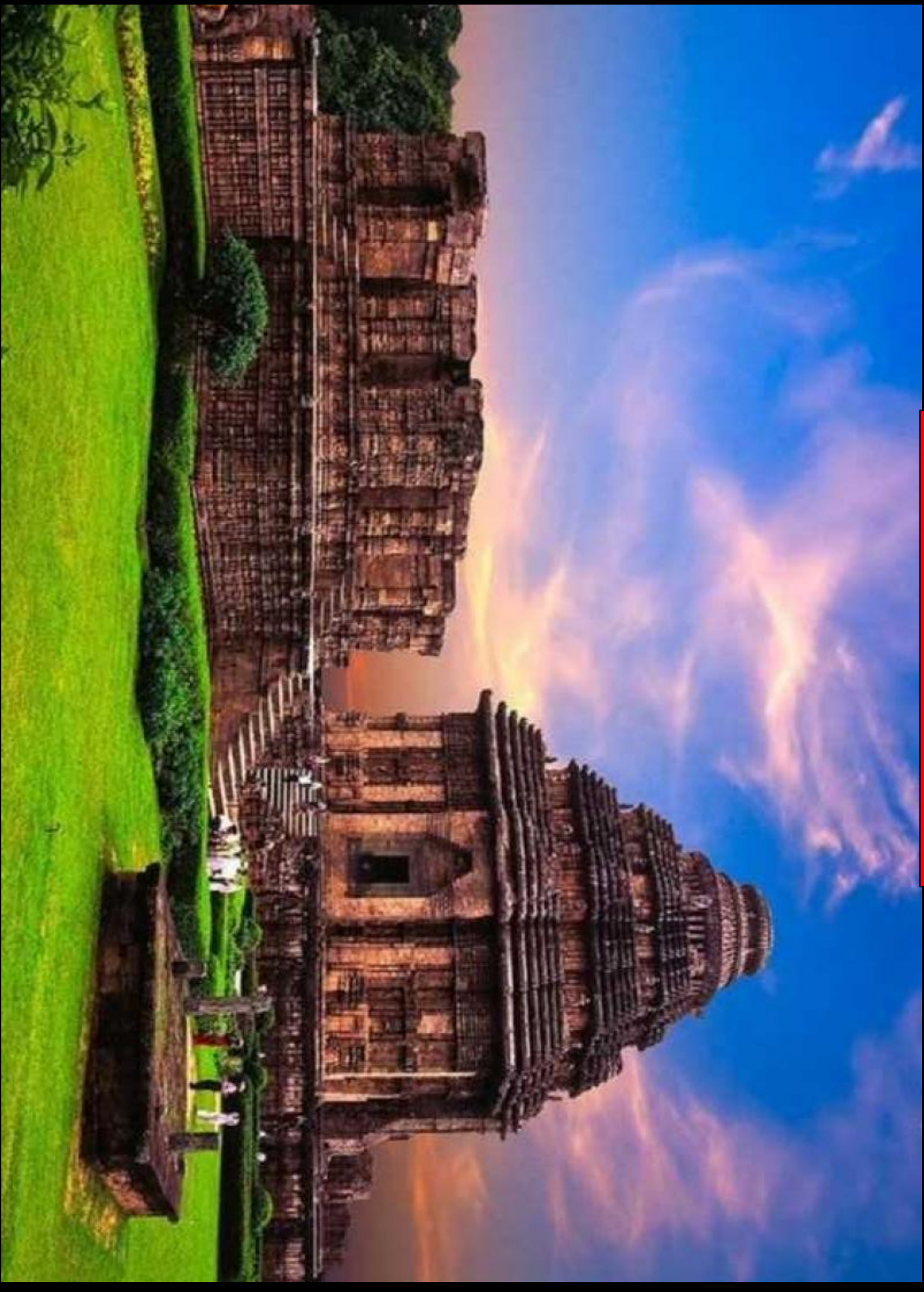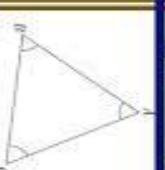
भारत के इन महान वैज्ञानिकों ने इतनी बड़ी-बड़ी खोजें की पर इतिहास में इनका नाम देखने को नहीं मिलता।

आर्यभट	शून्य
महर्षि सुश्रुत	सर्जरी
आचार्य कणाद	परमाणु संरचना
भास्कराचार्य	गुरुत्वाकर्षण
बौधायन	पाईथागोरस प्रमेय
नागार्जुन	धातुकर्मी तथा रसशास्त्री

भारत का दुर्भाग्य रहा है कि खोज भारतीयों ने की और इतिहास विदेशी वैज्ञानिकों का पढ़ाया जा रहा है।

दुनिया में जितनी भी खोजे हैं वो हमारे ऋषि-मुनियों ने की हैं जो आज के वैज्ञानिक की कल्पना से परे हैं।

भास्कराचार्य	गुरुत्वाकर्षण
आचार्य कणाद	अणु परमाणु
ऋषि विश्वामित्र	मिसाइल
ऋषि भारद्वाज	वायुयान
गर्गमुनि	नक्षत्रों
आचार्य चरक	शरीरविज्ञान, गर्भविज्ञान, औषधि विज्ञान
बौद्धयन	त्रिकोणमितिय रचना
कपिल मुनि	सांख्य दर्शन

भगवान राम और हनुमानजी की 6000 साल पुरानी प्रतिमा ईराक में खुदाई के दौरान मिली

इससे साबित होता है कि सनातन (हिंदू) संस्कृति सबसे प्राचीन है और पूरे विश्वभर में फैली थी।

राक्षस प्रवृत्ति के लोगो ने हमारी संस्कृति मिटाने का खूब प्रयास किया पर आज भी जगमगा रही है।

माँ अम्बिका भवानी, छपरा(बिहार)

गणेश प्रतिमा, थाइलैंड

धर्मरक्षा, हिन्दुत्व, सनातन संस्कृति के प्रचार-प्रसार के इस मिशन चलाने के लिए और इस पंचाङ्ग के विकास के लिए हमें अर्थ(फंडिंग) की जरूरत है। हिन्दू विरोधी ताकतों के पास फंडिंग देश-विदेशों (हर जगह) से आ रही है, ताकि हिन्दू और हिन्दुत्व(सनातन संस्कृति) को समाप्त किया जा सके, परंतु हम निरंतर प्रयास कर रहे हैं कि सभी सनातन प्रेमीयों को अपने संस्कृति की गुढ़ जानकारी हो और सब एकत्र हो तथा विश्वभर में सनातन धर्म/सनातन संस्कृति का प्रचार और प्रसार हो, ताकि हमारे विरुद्ध चल रहे सभी षड्यंत्रों को विफल किया जा सकें। कृपया हमारे इस प्रयास को सफल करने के लिए हमारा साथ दें।

IFSC Code- CBIN0281774

Account No- 5167433915

।।स्वप्न विचार।।

स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल
अग्नि उठाना	कष्ट	गुरु दर्शन	कार्यसफलता	दुग्धस्नान	धनलाभ	बारात दर्शन	चिन्ता	लौह दर्शन	स्वास्थहानि
अग्नि दर्शन	शुभकार्य	गुलाब दर्शन	मनोकामनपूर्ण	दुर्घटना दर्शन	रोगसम्भावना	बिच्छुदंश	कष्टभय	वर्षा दर्शन	हानि,चिन्ता
आग लगी दर्शन	दु:ख की प्राप्ति	घर जलना	लाभ	देवदर्शन	धनलाभ	भगिनी दर्शन	सौभाग्यवृद्धि	वाटिका दर्शन	सुखप्राप्ति
अजा दर्शन	धनलाभ	गृहनिर्माण	प्रसिद्धिप्राप्ति	देवस्थल दर्शन	सुखमयजीवन	भाषण श्रवण	वादविवाद	विकृतशरीर दर्शन	दु:खप्राप्ति
अर्थी दर्शन	सफलता	गौ दुग्धपान	धनलाभ	जुआं खेलना	धनहानि	भूकम्प दर्शन	सन्तानकष्ट	विदेशगमन	कार्यावरुद्ध
आकाश से गिरना	चिन्ता,मानहानि	ग्रहण दर्शन	रोग,चिन्ता	द्विचक्रचालन दर्शन	कार्यसिद्धि	भोजन को पचाना	रोग	विधवा दर्शन	हानि
बाजार का दर्शन	धनलाभ	चन्द्र दर्शन	बन्धन	धर्मशास्त्र श्रवण	धनप्राप्ति	मदिरापान	मृत्यु	विमान दर्शन	सौभाग्यसूचक
आम खाना	लाभ	चिता दर्शन	सफलता	दौड़ना	समस्या	मधुमक्खी दर्शन	शुभफल	विवाह	मृत्यु
आशीर्वाद ग्रहण	धनलाभ	छिपकली दर्शन	दुर्भाग्यसंकेत	धूपदर्शन	शत्रुनाश	मन्दिर दर्शन	धनलाभ	विषभक्षण	परेशानी
उत्तरदिग्गमन	गृहत्याग	जलपान	भाग्योदय	ध्वजदर्शन	धनलाभ	मयूर दर्शन	शोक	वृद्धस्त्री दर्शन	दु:खप्राप्ति
जूता पहनना	सम्मानप्राप्ति	जल में गिरना	चिन्ता	मगरमच्छ दर्शन	शत्रुकष्ट	मल्लयुद्ध दर्शन	मुकदमा	बैल दर्शन	धर्मकार्य
ऊँट का दर्शन	भय	जादुगर दर्शन	अशुभलक्षण	नदीदर्शन	आकांक्षापूर्ति	महात्मा दर्शन	धनप्राप्ति	बैल द्वारा मारना	हानि
ऊँट से गिरना	अवनति	टिकट ग्रहण	पदत्याग	नागदर्शन	लज्जित	मीनदर्शन	मङ्गलकार्य	वेद्य दर्शन	रोग
गर्मजलपान	अशुभ	डोली दर्शन	समस्यायुक्त	नृत्यदर्शन	मृत्यु	मिष्ठान्नखाना	संकट	शवदर्शन	सफलता
औषधि ग्रहण	स्वस्थ	चावल खाना	शुभसमाचार	निराश	सफलता	मुद्राप्राप्ति	रोजगार	शस्त्रदर्शन	युद्ध
कच्चाफल दर्शन	अशुभ	तपस्वी दर्शन	आत्मोन्नति	पक्वफलदर्शन	शुभ	मुण्डन	मृत्यु	शस्त्र गिरना	पराजय
कन्या का दर्शन	तीर्थयात्रा	पान खाना	मिलाप	पदच्युतदर्शन	मृत्यु	मूषक दर्शन	दुर्भाग्यसूचक	शस्त्र उठाना	विजय
कपिल वस्त्रधारण	ख्याति	ताम्र दर्शन	यात्रादुर्घटना	पर्वदर्शन	शुभ	यज्ञदर्शन	सौभाग्यसूचक	शुकदर्शन	धनलाभ
कबूतर दर्शन	शुभसंदेश	तिल खाना	ऋण	पश्चिमदिग्गमन	बाधायुक्त	यमुना दर्शन	रोगाप्ति	श्रृंगार करना	अपमान
कमल दर्शन	धनप्राप्ति	तीर्थ स्नान	त्याग	पहरेदार दर्शन	चोरी	युवती दर्शन	नगदलाभ	सफेद कुत्ते पर बैठना	सुखसमृद्धिप्राप्ति
करतल दर्शन	प्रसन्नताप्राप्ति	तैलपान	मृत्यु	प्रसन्नता दर्शन	विफलता	रक्त दर्शन	उन्नति	शौचगमन	व्यय
कौआ दर्शन	अशुभ	त्रिशूल दर्शन	सफलताप्राप्ति	प्रसाद प्राप्ति	धनलाभ	रजक दर्शन	सफलता	समुद्र दर्शन	धनलाभ
कारागारगमन	बन्धनग्रस्त	दक्षिणदिग्गमन	रोग	पत्थर दर्शन	विपत्ति	रजत दर्शन	विश्वासघात	समाचार पढना	सफलता
कुत्ता पालना	संकट	दधि दर्शन	सफलता	पितृदर्शन	धनलाभ	रथदर्शन	यात्रा	सर्प का डसना	धनलाभ
कोलाहल दर्शन	राजभय	दर्पण दर्शन	विचलित	पुष्पप्राप्ति	धनलाभ	रसोइघर में प्रवेश	मृत्यु	स्वर्गदर्शन	आयुपूर्ण
खड्ग धारण	उच्चपदप्राप्ति	अनार खाना	रोग	पूर्वदिग्गमन	विजय	राक्षस दर्शन	कष्टनिर्वृत्ति	सर्प खाना	विफलता
खटिया पर सोना	सौभाग्यसूचक	दाहसंस्कार दर्शन	दीर्घायु	फकीर दर्शन	शुभफलदायक	रुद्राक्ष दर्शन	कल्याण	सर्प मारना	शत्रुदमन
गङ्गा स्नान	सन्यास	दुग्ध दोहन	भारोत्थापन	फलप्राप्ति दर्शन	धनलाभ	रोगी दर्शन	दु:खनिवृत्ति	सीताफलदर्शन	सौभाग्यसूचक
हाथी दर्शन	व्यवसायवृद्धि	दुग्धपान	प्रतिष्ठा	बालक का रोना श्रवण	रोग,निराशा	रोटी खाना	रोग	सुवर्ण दर्शन	रोग,धनहानि

।। पुरुष जन्मकुण्डली में द्वादशभावस्थ ग्रहों के फल ।।

ग्रह	तनु १	धन २	भ्राता ३	सुख ४	पुत्र ५	शत्रु ६	स्त्री ७	मृत्यु ८	धर्म ९	कर्म १०	लाभ ११	व्यय १२
सूर्य	अङ्गपीड़ा	धननाश	निरोगी	दु:खी	सुतहानि	शत्रुनाश	स्त्रीदुष्टा	अल्पायु	दुष्टमति	शूर	धनी	दुष्टस्वभाव
चन्द्र	कान्तिसुख	सम्पत्तिवान्	कीर्तिमान्	सुखभोगी	धनी,पुत्रवान्	अल्पायु	सुभार्यावान्	योगी	धर्मात्मा	तेजयुक्त	धनी	कामी
मंगल	रक्तकोप	ऋणी	विक्रमी	दु:खी	पुत्रहीन	शत्रुनाश	स्त्रीनाश	शरीरपीड़ा	पापरत	तेजस्वी	धनी	पतितदार
बुध	सुखी	धनी,गुणी	अरिमर्दन	सुखी	अल्पपुत्र	रोगी	धर्मज्ञ	गुणी	सुखी	कीर्तिमान	धनी	दरिद्र
गुरु	विद्वान्	धनागम	पापी	सुखी	प्रतापी	कामी	सुभार्या	नीचस्व	धार्मिक	सम्पत्तिवान्	सुलाभ	खल
शुक्र	सुखी	धनी	पापी	सुखी	बुद्धिमान्	रोगी	कामी	नीच	तपस्वी	सम्पत्ति	सुमति	रोगी
शनि	दु:खी	धनहानि	पराक्रमी	दु:खी	पुत्रहीन	शत्रुजित्	स्त्रीकुलटा	नेत्ररोगी	दुष्टबुद्धि	पराक्रमी	धनवान्	दु:खी
राहु	रोगी	निर्धन	विक्रमी	मातृहानि	कुमति	सबल	स्त्रीरोगी	रोगी	दैन्ययुक्त	मानी	सुख्यात	पतित
केतु	सकाम	खल	शूर	दु:खी	मूर्ख	सबल	स्त्रीहानि	क्लेशयुक्त	पापी	पितृहीन	धनी	दुर्जन

।। स्त्री जन्मकुण्डली में भावस्थ ग्रहों के फल ।।

ग्रह	तनु १	धन २	भ्राता ३	सुख ४	पुत्र ५	शत्रु ६	स्त्री ७	मृत्यु ८	धर्म ९	कर्म १०	लाभ ११	व्यय १२
सूर्य	क्रोधनी	दरिद्रा	सुसुता	सपीड़ा	विपुत्रा	सुखिनी	दु:खार्ता	विधवा	धर्मज्ञा	सुकर्मा	सुलाभा	सरोगा
चन्द्र	अल्पायुषी	बहुधना	सुखिनी	सुभगा	सुपुत्रा	सरोगा	पतिप्रिया	रोगिणी	सुखिनी	धर्मज्ञा	गुणज्ञा	हीनांगी
मंगल	विधवा	बन्ध्या	विसहजा	सु:खार्ता	विपुत्रा	अरोगा	विधवा	नेत्ररोगणी	दु:खिनी	कुपुत्रा	सुलाभा	खला
बुध	सौभाग्या	धनाढ्या	पुत्रवती	सुगृहा	धीकान्तियुक्ता	सकोपा	पतिव्रता	कृतघ्ना	सुभोगा	सत्कर्मा	पतिव्रता	कृशाङ्गी
गुरु	सती	धनाढ्या	सुसहजा	सुखिनी	सुगुणा	सापदा	कीर्तियुक्ता	सरोगा	पुत्राढ्या	साधवी	सुपुत्रा	सुव्यया
शुक्र	ससुखा	सुभगा	धनाढ्या	सुखिनी	पुत्रवती	दरिद्रा	पतिप्रिया	विसुखा	धर्मरता	सधना	सुपुत्रा	सुव्यया
शनि	बन्ध्या	दु:खिनी	सुदक्षा	हृद्रोगा	विपुत्रा	गुणज्ञा	विधवा	दु:खनी	बन्ध्या	पापिनी	सुलाभा	मूढा
राहु	पुत्रहीना	दरिद्रा	सवित्ता	रोगार्त्ता	विपुत्रा	सधना	दु:खिता	विधवा	बन्ध्या	दुष्कर्मा	नीरोगा	दुष्टा
केतु	दु:खिनी	दु:खार्ता	रोगणी	मातृहानि	अपुत्रा	धनयुता	विधवा	दु:खिनी	शोकयुक्ता	पापिनी	सुभगा	रोगिणी

।। गोचर में ग्रहों का द्वादशभावस्थ फल ।।

ग्रह	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पञ्चम्	षष्ठ	सप्तम्	अष्टम्	नवम्	दशम्	एकादश	द्वादश
सूर्य	स्थाननाश	भय	श्रीप्राप्ति	मानभंग	दैन्य	विजय	यात्रा	पीड़ा	सुकृतिनाश	सिद्धि	धनलाभ	द्रव्यनाश
चन्द्र	अन्नलाभ	धननाश	सुख	रोग	कार्यनाश	धनलाभ	स्त्रीलाभ	रोग	धर्मलाभ	सुख	धनलाभ	धननाश
मंगल	शत्रुभीति	धननाश	धनलाभ	शत्रुभय	धननाश	धनलाभ	द्रव्यनाश	शत्रुभय	शत्रुभय	शोक	धनलाभ	धननाश
बुध	बन्धन	धनलाभ	शत्रुभय	पशुलाभ	सुख	स्थानलाभ	पीड़ा	धनलाभ	पीड़ा	सुख	धनलाभ	धननाश
गुरु	भय	धननाश	क्लेश	धननाश	सुख	शोक	राजमान	पीड़ा	सुख	दैन्य	धनलाभ	पीड़ा
शुक्र	शत्रुनाश	धनलाभ	सुख	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुभय	शोक	धनलाभ	वस्त्रलाभ	दु:ख	धनलाभ	धननाश
शनि	भय	धननाश	ऐश्वर्य	शत्रुभय	पुत्रनाश	धनलाभ	दोष	पीड़ा	धर्मनाश	दौर्मनस्य	धनलाभ	धननाश
राहु	हानि	धननाश	धनलाभ	वैर	शोक	श्रीप्राप्ति	कलह	मृत्यु	दु:ख	वैर	सुख	शोक
केतु	रोग	वैर	सुख	भय	सुख	धनलाभ	कलह	रोग	पाप	शोक	कीर्ति	शत्रुभय

सर्वतोभद्र चक्र
एकलिङ्गतो चक्र
चतुर्लिङ्गतो चक्र
अष्टलिङ्गतो चक्र
द्वादशलिङ्गतो चक्र
गौरीतिलक मण्डल चक्र
वास्तु मण्डल चक्र
नवग्रह चक्र